स्नेह भरल गोदी के पावल, ई हमार भासा भोजपुरी।
फैलाइब हम देस-देस में, जइसे मधुरगंध कस्तुरी ।।

खोइंछा

भोजपुरी अनुसंधान संस्थान, अनाईठ,
'आरा, भोजपुर (बिहार) के ''दुमाही''

भोजपुरी पत्रिका

अंक-7,8''जोइंजांक''सितम्बर-अक्टूबर,नवम्बर-दिसम्बर-2001

राउर चिट्ठी मिलल

* 'खोंइछा' के अंक–5,6 पाके एगो लमहर इन्तजार पूरा भइल। भासा के प्रूफ दोसहीन बा। 'खोंइछा' जइसने पत्रिका खातिर मुहावरा बनल बा – 'गागर में सागर'। एतना–एतना रचना अंइसा के भ दीने रउआ बाकी तबो एह धक्का–धुक्की में कवनों रचना ऊ चाहे छोटकी कविता होखो भा लेख भा समीक्षा–कवनों में अंड़सइला के कांख–कूंख नइखे। भोजपुरी के एतना रामायन लिखाइल बाकी ओह सब में 'खोंइछा' हनुमान चालीसा नियर इज्जत पा रहल बा।

सम्पादकीय में आपन आटा गील क के भोजपुरी में पत्रिका निकालला के सवाल बड़ा करेंट बा। एही मानी में साहित्यकार भागी होला कि आपन घर फूंक के तमासा देखल बिना ना मानेला।

डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव, नई दिल्ली।

* 'खोंइछा' के अंक 5,6 मिलल। सुरेश कांटक, अजय कुमार ओझा, भगवती प्रसाद द्विवेदी आदि के रचना नीक लागल। भोजपुरी लेखन में प्रचलित शब्दन के प्रयोग होखे। शेष तत्सम राखल जाय। तत्सम के कान–नाक के ना बिगाड़ल जाय। डॉ० बच्चन पाठक 'सलिल', जमशेदपुर

* 'खोंइछा' के अंक 5,6 मिलल। पढ़ के मन गदगद हो गइल। एकरा भीतर जवन सामग्री अपने प्रकासित कइले बानीं, ऊ गगरी में समुन्दर भरल बा। सम्पादकीय सराहनीय बा। 'कांटक जी के कुटुकी', 'रासू के रसगुल्ला', रामनाथ पाण्डेय जी के निबन्ध काफी पसन्द आइल। निर्भीक जी के लोककथा बढ़िया लागल। डॉ० भगवान सिंह 'भास्कर' जी के यात्रा संस्मरण 'एगो उपेक्षित धाम : जीरादेई' बड़ा नीक लागल। अइसे बहुते लोग घूमेला बाकिर घूमला के संस्मरण के जोगा के राखे के योग्यता संयोगने केहू में होला। 'भास्कर' जी एह में आगे बानीं। जीरादेई के उपेक्षा के समाज के सामने राखे में उहाँ का तनिको हिचकिचाइल नइखीं। उहाँ के हमरा तरफ से बधाई।

रामाश्रय प्र० श्रीवास्तव 'देसु', संपादक – भोजपुरी वार्त्ता, नरकटियागंज (बिहार)

"खोंइछा' का संयुक्तांक 5–6 प्राप्त हुआ। आभारी हूँ। दूसरे पृष्ठ पर ही पाण्डेय जी के हाइकु पढ़ने को मिले। मन प्रसन्न हो गया। 'रासू के रसगुल्ले' ने मधुरता प्रदान की। कवितायें, लोक साहित्य, गजलें, समीक्षा, व्यंग्य, लघुकथायें, निबंध। भरपूर आनंद मिला। मेरी बधाई स्वीकार करें।

डॉ० भगवत शरण अग्रवाल, सम्पादक–हाइकु भारती, अहमदाबाद

* 'खोंइछा' के अंक 5–6 मिलल। पत्रिका के एह अंक में रमाशंकर जी के लिखल समीक्षा बड़ा नीमन लागल। बिसय के अनुसार समीक्षा के भासा होखहीं के चाहीं। बाकिर सबका पास अइसन कला कहाँ बा ? समीक्षा लिखल कवनों 'खेल–तमाशा' ना ह। 'निर्भीक' जी के रचना से भोजपुरी लिखे आ बोले बहुते लोग सीख जाई। 'कांटक जी के कुटुकी' बड़ा मजेदार बा। स्वामी जी के लघुकथा 'आदमी' भीतर से हिला देता। छोटे–छोटे रचना से राउर 'खोंइछा' भरल–पूरल बा। डॉ० शंकरमुनि राय 'गड़बड़' जोबट, झाबुआ (म०प्र०)

दुख के समाचार

बड़ा दुख के बाति बा कि उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद के बाँसडीह गाँव के सपूत, हिन्दी आ भोजपुरी के जानल–मानल समीक्षक, लोक साहित्यकार श्रीराम सिंह 'उदय' जी के 20 सितम्बर 2001 के गंगालाभ हो गइल। उहाँ के जनम 01 जनवरी 1928 के भइल रहे। 'उदय' जी के निधन से साहित्य जगत् के जवन क्षति भइल, ओकर भरपाई कबो ना हो सके। 'खोंइछा' परिवार उहाँ के प्रति सरधा सुमन अर्पित करत भगवान से निहोरा करत बा कि उहाँ के आत्मा के सान्ति देसु। संपादक

रपट

* 'हिन्दी अकादमी', दिल्ली, बरिस 2001–2002 के 'काका हाथरसी सम्मान' हिन्दी–भोजपुरी के चर्चित कथाकार आ ललित निबन्धकार डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव जी के उहाँ के हास्य–व्यंग लेखन प देलस। ई सम्मान उहाँ के 10 नवम्बर 2001 के फिक्की सभागार, तानसेन मार्ग (मण्डी हाउस), नयी दिल्ली में आयोजित 'साहित्यकार एवं कृति सम्मान समारोह' में दीहल गइल। –मनोज कुमार सिंह 'भावुक', महाड़ (महाराष्ट्र)

* बक्सर जिला के दीवान के बड़का गाँव में पिछ्ला दिने हिन्दी–भोजपुरी के चर्चित कथाकार, नाटककार श्री सुरेश कांटक के भोजपुरी नाटक 'वंदे मातरम्' आ 'सरग–नरक' के मंचन शशि नारायण सिंह आ शैलेश कुमार के निर्देसन में भइल। – बलिराम सिंह 'ब्राह्मण', कांट (बक्सर)

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकासक :

भोजपुरी अनुसंधान संस्थान,

मुहल्ला+डाकघर- अनाईठ (आरा) (प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)

जिला-भोजपुर (बिहार) 802301

संरक्षक

डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

डॉ० गदाधर सिंह

डॉ० अमर सिंह

डॉ० रमाशंकर आर्य

सम्पादक

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा

सलाहकार

रामायण सिंह

मुद्रक :

अजय कम्प्यूटर

पोस्टल कॉलोनी,आरा

सहयोग - चार रोपेया

एह अक म .....

राउर चिट्ठी मिलल - 02

सम्पादकीय - 04

रपट - 02,11,19

पावती - 19

कहानी-लघुकथा-व्यंग

सुरेश कांटक - 06

डिम्पल कुमारी - 08

डॉ० राजकुमार सिंह 'कुमार' - 14

ललन प्रसाद पाण्डेय - 14

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा - 15

गजल-कविता-गीत

दिलीप कुमार शर्मा 'दीपक' - 05

राजेश कुमार 'च्यवन' - 05

डॉ० स्वर्ण किरण - 07

भोला प्रसाद 'आग्नेय' - 07

कमलेश कुमार प्रजापति 'रसियन'- 07

डॉ० रामसेवक 'विकल' - 07

पारस नाथ सिन्हा - 07

कौलेश्वर सिंह 'कौशल' - 10

मुन्द्रिका प्रसार 'विकल' - 10

मनोज कुमार सिंह 'भावुक' - 10

चौ०कन्हैया प्र० सिंह 'आरोही'- 10

आचार्य पाण्डेय कपिल - 11

राधा मोहन पाल - 11

कृष्णानन्द कृष्ण - 11

धर्मनाथ तिवारी - 11

राजदेव करथ - 11

डॉ० शकर मुनि राय 'गड़बड़'- 12

दिलीप कुमार 'दिलदार' - 13

बाबू राम सिंह 'कवि' - 15

शिव शंकर प्रसाद जायसवाल 'मौजी'- 18

उमेश कुमार पाठक 'रवि' - 19

निबन्ध

डॉ० गदाधर सिंह - 04

बरमेश्वर सिंह - 16

डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'- 18

कसौटी

डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव - 12

पत्रिका में व्यक्त विचारन खातिर खुद रचनाकार जिम्मेवार बाड़न, सम्पादक भा प्रकासक ना।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

आजु सउँस संसार आतंकवाद के चपेट में आ गइल बा। हमनीं के देस भारत त कहिए से एह आतंकवाद से जूझि रहल बा। भारत के जूझल देखि के सउँसे दुनिया ताल ठोकत रहे। चउल करत रहे। एगो के हलकानी में देखि के दोसरका त चउल करबे करेला बाकिर जब अपना कपारे पड़ि जाला त लागेला दिने-दुपहरिया तरई लउके। आँखि के सोझा लुती चटकं लागेला।

अमेरिको भारत के हाल देखि के अपना आँखि प पट्टी बन्हले रहे, कान में रूई ठूंसले रहे आ आपन मुँह में जाब लगा लेले रहे। ठीक ओइसहीं जइसे गान्ही बाबा के तीनों बानर। बाकिर जब अपना कपारे पड़ल तब ओकरा बुझाइल कि आतंकवादी के आतंक का कहल जाला ? दोसरा के कपार प पड़ल दुख जब अपना कपारे पड़ेला तब कइसन लागेला? ई जब अमेरिका के बुझा गइल तब जाके ओकर आँखि खूलल आ लागल चिचिआए। लागल लोग के अपना पछ में तइयार करे आतंकवाद से लड़े खातिर। ओह घरी ओकरा आपन दादागिरी प खतरा नजर आवे लागल।

आतंकवादी पैदा करे, आतंकवाद के बढ़ावो देबे वाला आतंकवाद के खिलाफ आपन नटई फारि के चिचिआये लागल। एकदम दुमुँहा सांप लेखा वाला चाल चले लागल। अठरी ना त पूतवो मीठ आ भतरो मीठ वाला चाल चले लागल। लगावेली काकी, बझावेली काकी वाला पहाड़ा पढ़े के चालू क देलस।

खैर, बाति चाहे जवन होखे आतंकवाद के सफाया कइल बहुते जरूरी बा। आतंकवादी आखिर के ह ? आतंकवाद के पीछे वोजह का बा? काहें आतंकवाद दिन-प-दिन बढ़त जा रहल बा ? आतंकवादियो त एगो आदमिये ह। बाकिर ऊ आजु अतना निरदयी आ हतेयार काहें हो गइल कि आपने भाई के बेमोह-दया के हलाल करि देता ? ऊ आजु आपने भाई के खून से आपन पियास बुता रहल बा। आदमी जेकरा के एह धरती प के सभसे समझदार परानी गिनल जाला, आजु का कारन से हतेयार आ कसाई के रूप धइले चलि जा रहल बा ? आदमी के आदमियत कहवां हेरा गइल ? ओकर मानवता कवना खोंह में लुका गइल ? बेकसूरन के जान लेला से ओकरा का फायदा हो रहल बा ? आदमी आदमिये के जान के गाहँकी काहें बनि गइल ?

एकर सीधा-सीधी एके उपाय बा। आतंकवादी चाहे जहवाँ होखसु, चाहे ऊ कवनों कौम के होखसु, कवनों जाति-धरम के होखसु, उनुका के मटियामेट कइल बहुत जरूरी बा। बिना मार के त भूतो ना भागे। आतंकवादियन के जब बेकसूरन के जान लेवे में इचिको मोह नइखे लागत त उन्हनीं के मारे में मोह कइसन ? मरउवत कइला प त ऊ कपार प चढ़ि के नचबे करी। एह से उन्हनीं के साथे कवनों किसिम के मरउवत ना। आतंकवाद के खिलाफ सउँसे दुनिया के एके संगे मिल के लड़े के होखी। तबे एगो अमन-चैन पसन्द संसार में आदमी अमन-चैन से रहि सकी।

पत्रिका के जोड़ा अंक निकाले आ समय से अंक ना निकालि पावे के पीछे का-का वोजह बताईं? वोजह बतवला प हमार कुछ सहयोगी लोग मुँह फुला लीहें। एह से हम एकरा के तोपलहीं रहल चाहत बानीं। एह अंक के बाद से उमेद करत बानीं कि अंक समय से आ जाइल करी।

एगो साल बीते जा रहल बा आ एगो नाया साल आ रहल बा। नाया साल के बधाई।

दुर्गापूजा, दीवाली, छठ सभ के एके जवरे मंगलकामना के साथे। ❑ सम्पादक

निबंध

शाहाबाद के दिवंगत भोजपुरी रचनाकार

एगो परिचय डॉ० गदाधर सिंह, विभागाध्यक्ष,
भोजपुरी विभाग,वीर कुँवर सिंह वि०वि०आरा

आधुनिक भारतीय आर्य भासा सभ में 'भोजपुरी' एगो महत्वपूर्ण भासा बिया। भासा वैज्ञानिक लोग एकरा के पूरबी साखा के अन्दर रखले बाड़े जेकरा में बंगला, उड़िया,असामी आ बिहारी वोगैरह के गिनती कइल जाला। 'बिहारी' के अन्दर मैथिली, मगही आ भोजपुरी के मानल गइल बा। भासा विज्ञान के हिसाब से 'भोजपुरी' मैथिली आ मगही के तुलना में अवधी के जादे नजदीक बिया। एह तरी कहल जा सकत बा कि भोजपुरी अइसन भासा बिया जवना के एगो छोर मैथिली,मगही के छूवेला त दोसरका छोर अवधी के। जहाँ तक एकर क्षेत्र के फइलाव के सम्बंध बा त एकर बोले वालन के आबादी मराठी, गुजराती, बंगला वोगैरह से जादे लगभग बीस करोड़ ले बा। प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिंह बिहार आ उत्तर प्रदेश के चउदह जिला में एकर बोलल जाये के उल्लेख कइले बाड़े -

"आरे आवऽ, छपरा आवऽ,बलिया,मोतिहारी आवऽ।
राँची अउर पलामू आवऽ, गोरखपुर देवरिया आवऽ।
गाजीपुर,आजमगढ़ आवऽ, बस्ती अउर जौनपुर आवऽ।
मिर्जापुर, बनारस आवऽ, सोनेके कटोरिया में।

www.bhojpurisahityangan.com

दूध भात लेले आवऽ, बबुआ के मुहवाँ में घुटुक।''

एकरा अलावे भारत के हरेक सहर में एगो जबरिआइल समूह के रूप में भोजपुरिया लोग रहेला। भारत के बाहर ब्रिटिश गायना, ट्रिनीडाड, दक्षिण अफ्रीका आदि देसन में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जइसन ऊँच पदन के भोजपुरिये सुसोभित करि रहल बाड़न। मॉरीशस के 'क्रियोल' भासा के गठन 'फ्रेंच' आ 'भोजपुरी' सब्दन के मेल से भइल बा।

जहाँ तक साहित्य आ संस्कृति के सवाल बा भोजपुरी क्षेत्र सभसे आगे बा। जबना तरी किसन भक्त कवि लोग ब्रजभासा के आ रामभक्ति साखा के कवि लोग अवधी के आपन अभिव्यक्ति के जरिया बनवले बाड़े, ओही तरी निरगुन भक्ति सम्प्रदाय के सन्त लोग भोजपुरी के अपना के एकरा के गौरवान्वित कइले बाड़े। कबीर, धरनीदास, धरमदास, लछिमीसखी, दरिया साहेब, दलित वर्ग के सम्मान देवे वाला शिवनारायणी सम्प्रदाय के प्रवर्तक शिवनारायण जी, सरभंग संप्रदाय के बाबा कीनाराम, टेकमन राम वोगैरह सभ के भासा भोजपुरी बा। कुछ लोग के अचम्भो हो सकेला कि विद्यापति के कुछ पद भोजपुरी में बा। जइसे -

''बसहट घरवा के नीच दुअरिया, ए उधो रामा झिलमिल पानी,
पिया ले में सुतलो ए उधो, रामा अँचरा डसाई
जो हम जनितो ए उधो, रामा पिया जइहें चोरी
रेसम के डोरिया ए उधो, खींचो बँधवा बाँधितो
रेसम के डोरिया ए उधो, टूटि -फाटि जइहों
बचन के बान्हल पियवा, रामा से हो कहाँ जइहें।।''

एह पद के डॉ० ग्रियर्सन ''रायल एशियाटिक सोसाइटी'' के जर्मन (पृ०188) में उद्धृत कइले बाड़े। जहाँ तक शाहाबाद (अब चारि गो जिला-भोजपुर,बक्सर, रोहतास,भभुआ) के संबंध बा, भोजपुरी भासा के उन्नयन में एकर योगदान बहुत महत्वपूर्ण बा। एह सम्बन्ध में महत्वपूर्ण रचनाकारन के उल्लेख पर्याप्त होखी।

दरियादास :- इहाँ के जनम संवत् 1691 वि० में दिनारा थाना के करकंधा गाँव में भइल रहे। इनिकर पिताजी परमार क्षत्रिय रहले बाकिर ऊ इस्लाम धर्म अपना लेले रहन। दरियादास जी के प्रवर्तित संप्रदाय के दरियादासी सम्प्रदाय के नांव से जानल जाला। इहाँ के कइअक गो रचना बाड़ी स - 'अग्यान' 'अमरसार', 'काल चरित्र', 'गणेश गोष्ठी' 'दरियासागर', 'निर्मल ज्ञान', 'ब्रह्म विवेक', 'विवेक सागर', 'शब्द'(बीजक)वोगैरह। इहां के रचनन में निरगुन संप्रदाय के तत्व मिलेला। इहां के भासा बहुत मधुर आ प्रसाद गुन से ओत-प्रोत बा। जइसे -

''मोहि न भावै नैहरवा, ससुरवा जइहों हो।।
नैहर के लोगवा बड़ अड़ियार।
पिया के बचन सुनि लागेला बिकार।।
पिया एक डोलिया दीहले भेजाय।
पाँच-पचीस तेहि लागेला कँहार।।
नैहर में सुख-दुख सहलों बहूत।
सासुर में सुनलों खसम मजगूत।।
नैहर में बारी भोली ससुरा दुलार।
सत के सेनुरा अमर भतार।।
कहे दरिया धन भाग सोहाग।
पिया करि सेजिया मिलल बड़ भाग।।

गीत (अबहीं अउरी बा।)

तिरंगा

दिलीप कुमार शर्मा 'दीपक'

लहरेला भारत के सान हो, हमरा देस के तिरंगवा।
हमनी के गरब-गुमान हो, हमरा देस के तिरंगवा।।
गंगा -जमुना के जइसे लहरिया,
लहरे ऊपर में रंगवा केसरिया,
बीरन के त्याग बलिदान हो, हमरा देस के तिरंगवा।
लहरेला भारत के ------।।
सादा के मतलब सच्चाई-ईमान बा,
हरियर बतावे देस कृसि प्रधान बा,
विकासवा के चक्र गतिमान हो, हमरा देस के तिरंगवा।
लहरेला भारत के ------।।
सकल सहीदन के मधुर-मनोहर,
गाँधी आ नेहरू के इहे धरोहर,
एही पर सभ कुरबान हो, हमरा देस के तिरंगवा।
लहरेला भारत के ------।।
एही पर निछावर बा तन-मन समूचा,
लहरे गगनवा में हरदम ई ऊँचा,
'दीपक' के इहे अरमान हो, हमरा देस के तिरंगवा।
लहरेला भारत के ------।।

भिट्ठी, सीवान (बिहार)

**

काहें अँखिया मिलवलऽ?

राजेश कुमार 'च्यवन'

अँखिया मिलाई के उनसे भइल हो जुलुमवा -2
जियरा गइले मुरूझाई रे बटोहिया
दिनवा ना नीक लागे, राति रे नागिनिया
मनवा लोभाइल बाटे सुनु रे सजनिया।
उनहीं प अँटकल बा अब प्रान रे बटोहिया
जियरा गइले मुरूझाई रे बटोहिया।
पपीहा के बोलिया लागे, कनवा में पसीजल सीसा
अरे कोइलिया काहें छोड़े तान रे बटोहिया,
जियरा गइले मुरूझाई रे बटोहिया।
तनवा के सुधि नाहीं, जिनिगी के चाहत नाहीं
छने भरि के साँस बा अब ले ले रे बटोहिया,
जियरा गइले मुरूझाई रे बटोहिया।।

सिविल लाइन्स,बक्सर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

व्यंग

कांटक जी के कुटुकी–6

'पाँव लागी कोनाई काका !'

हमार बोली सुनते कोनाई काका जरि के अँगार हो गइले। ना बोलले, ना तकले, ना मूड़ी हिलवले, गुम-सुम मूड़ी गड़ले, भीतरे-भीतर लहके लगले।

'कोनाई काका पाँव लागीं। बहिर हो गइलऽ का?' हम फेरु हुदकवनीं।

'चुरुआ भर पानी में डूबि मरु रे बबुआ, ना त मरि जो खलिहा बोरा तर जैंता के। बहिर हम नइखीं,तें भइल बाड़' भीतरी के आगि बहरी उगिल दिहले, कोनाई काका। दे दिहले नीमन असीरबाद आ आँखि गुड़ेर के ताके लगले हमरा ओर।

'काहें काका, मुए के असीरवाद देत बाड़ऽ?' हम डेराइले पूछनीं।

'मूअबऽ तबे नू धरती के भार हलुक होई। जीयत लास बनि के जियला से बढ़िया नू बा, मू गइल। जवन गाय लागे ना तवन भीँट के।'

'हमहीं धरती के बोझा भइल बानीं का काका ? काहें अइसे कहत बाड़ऽ?'

'तहरा नइखे बुझात चोन्हर दास ! दिमाग चरे गइल बा कि चरवाहा इसकूल में पढ़े ? कावुल के घोड़ा के धरे का बहाने गाँगो आपन झूमर गावत राजसूय जग क लिहली, सउंसे दुनिया में ढोल पीट दिहली आ तोहरा मुंह में बकार नइखे ? मुंह में दही जमवले बाड़ऽ कि सी देले बाड़ऽ? कि कान में तेल डालि के कुंभ करन बनल बाड़ऽ ? गोली-बम-तोप के आवाज से हमार कान फाटे के ठेकान लागल बा, करेज टुकी-टुकी होता आ तूं अखबार, टी०वी० में रंग-बिरंगा फोटो देखत बाड़ऽ? चित्र प्रदर्सनी नीयर! चिरइन के जान जाय, लइकन के खेलवना ! सभ त सभ, हऊ नन्हमतुअवा-जनमतुअवा कंकर का कइले रहले हा सऽ, जवनन के सउंसे गतर खूनवा से रंगाइल रहे। तड़पि-तड़पि मू गइलन सऽ ?'

'तूं नइखऽ जानत काका, घोड़वा बड़ा कटाह हऽ। ओकरा के कस में कइल जरूरी रहे।'

... 'हँ-हँ, कहलऽ नू, बाललऽ नू ओकरे बोली ! इहे ह ढीली दे के टानल आ आपन गुडी आसमान में खिलावल। जवन ऊ कहलस, उहे बतिया सभे रटत बा। हवा-पानी, अकास-पताल सगरो ओही गाँगो के झूमर गवाता, काहें कि सगरो उनुके कबजा बा। उनुके मंतर लागल बा। सातवां आसमान पर ले फिट बा उनुके मसीन। जवन कहिहें, सभ उहे सुनी। जवन चहिहें, उहे करी। घाड़वा के कटाह बनावल के ? बुझाता ? एगो हाथ पीठ पऽ एगो हाथ आगा ? दोसरा के घर में आग लगवलऽ, बड़ा नीमन लागल। जब अपना दाढ़ी में लपट लहकल त हाय-तोबा !'

'तोहरा ना बुझाई काका, चुप रहऽ। ना त पोटो में पोटा जइबऽ।'

'चमड़नी के आगे ढीँढ़ ना छीपी बचवा। कहत नू बानीं कि ग्रेजुएट हरवाह हईं। भीतरे-भीतरे पुआ ना पाकी। धिरिकार ह तहरा पढ़ला-लिखला के, हाथ में कलम उठवला के। सभे जानत बा–बिना गाँगो के झूमर ना होखे। गाँगो दागल साँढ़ बनल दुनिया भर के हरियरी चरे-रउंदे का फेर में खुरखुन मचवले बाड़ी, आ तूं जोर से चिचिअइलो से गइलऽ ? बुझात नइखेऽ, ई कवन खेल होता ? हमहूँ बूझत बानीं, मीसा, टाडा आ डी०आई०आर हऽ ई पोटो।'

'त होखे द ना, बुड़बक मुअले पराये फिकिरे।'

'चोप्प ! आगे मत बोलिहऽ। कुरसी वाला त सत्ता का मोह में आपन मान-सम्मान, धरम-ईमान, बन्हकी ध के गिरगिट बनि के, धोती खोल के, परि गइल बा, तूं कवना मोह में पड़ल बाड़ऽ ए उलुकदास ! बाप-दादा के परम्परा देखऽ। कबीर बनऽ। ना त गाँगो के झंडा सउंसे दुनिया प लहराई आ तोहार चमड़ी छिलाई।'

कोनाई काका के रूप भयावन हो गइल। नस-नस चढ़ गइल। अरे चंडाल ! फेरु बोलले – नवहिन के नासा, एड्स के तमासा, महँगा पढ़ाई, सेयर बेचाई, हाथन में आँखि, ताकी अकास। गावऽ, खूबे गाँगो के झूमर ! मिलावऽ ताले-ताल। कावुल के घोड़वा कटाहे बा त का फारि देलस भक। लगावऽ अवरु ऊखी में राह। लगावऽ बबूर। जाने का-का दो बक गइले। फेनु बोलले – बबूर के जड़ खोद रे बचवा। कांट मत तूर। गाँगो जनमे के हई बिगड़ी, लगावेली बबूर । अपने कांटन में फंसि के एक दिन जइहें सुरधाम मकड़वा नीयर।'

'तें आपन काम कर बचवा। करतब निभाव। ना त समइया छोड़ी ना। छाती प चढ़ि के पूछी – बोल, अपना गूंगी के राज ? बहत रहे रकतधार आ तहरा आँखिन में बसल रहे कवन पुरस्कार ? आँखि-कान-मुँह बन क के गान्ही बाबा के चेला काहें बनलऽ? अन्हरिया में आपन दियरी काहें ना जरवलऽ ?'

कोनाई काका पकड़ लिहले हमार हाथ बनरमूठ नीयर। रोप दिहले अंगद के गोड़। दे दऽ सवाल के जबाब। तब पानी पीयऽ आ हमार असीरवाद लऽ। इहे बा यच्छ प्रस्न।

अरे ! ई धोबिया पाट ! हम हवा में .....। त्रिसंकु बनल। धत् तेरी की! बकसऽ बिलार मुरगा बाँड़ होके रहिहें। बाकिर ना, जइसे बोन सहर से राज चली काबुल के,ओसहीं भारतो के चली वासिंगटन से,ना ???

हाय रे सुदंसिया ! हाय ! ■

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

डॉ० स्वर्ण किरण

तूँ अइहऽ हमरा पास तहरा के हम करेजा में साट लेब,
मधु अइसन तहरा के तरहथी पर गिरा के चाट लेब।
तूँ त मस्ती से भरल बाड़ू तोहर बार बड़ा लहरदार,
हँ डरऽ मत कि तोहर मस्ती के हम बाँट लेब।
हम तांत्रिक साधक के चेला हईं साधना में लागल,
ई मत समझऽ कि तोहर खूबसूरती के काट लेब।
गुमसुम रह के समय बितावे के अब कहाँ बा जरूरत,
तूँ खुलल किताब बाड़ू जब चाहब उलाट लेब।
तोके हिरदा में बसाइब, देवी दुर्गासन मानब,
तहरा साथे आपन जिनगी के खाई के पाट लेब।

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,हि०वि०किसान
कॉलेज सोहसराय (नालंदा)–803118

गजल

भोला प्रसाद 'आग्नेय'

आफताब के हम गगन में ढलत देखनीं।
बर्क के जद पे माहताब के चलत देखनीं।।
जरत बाड़िन बेटी रोजे ससुरारी जा के।
अरथी डावरी कानून के निकलत देखनीं।।
हर घड़ी डँसत रहेला हमके तब्बो हम।
आस्तीन में अपने साँप के पलत देखनीं।।
ना जानी केतने बेर चोट खइले बानीं।
बरफ के मानिन्द पत्थर के पिघलत देखनीं।।
बेर-बेर माफ कइलीं के त हद भ गइल।
हर बेर उनुका से खुद के छलत देखनीं।।
का फायदा होई अपना सरसब्ज चमन से।
अंगूर के लता में बबूल के फलत देखनीं।।
हांके मजबूर मान लिहनीं हार आपन।
उनुका के मोहरा सतरंज के बदलत देखनीं।।
सभे कहे ला मेधावी आ बढ़िया बा जेहन।
सड़की प 'आग्नेय' के हाथ मलत देखनीं।।

29 रघुनाथपुरी, सिविल लाइन्स बलिया
(उ०प्र०)277001

कविता

भुज के भूकम्प

कमलेश कुमार प्रजापति "रसियन"

भूजा जस भुज में भुजा गइलें आदिमी।
धरती के गोदी में समा गइलें आदिमी।।
टूटि गइले हाथ-गोड़ बिगड़ल सुरतिय,
कहवाँ से आ गइले अइसने बिपतिया
धरती के हिलते बगा गइलें आदिमी।।1।।
भूजा जस भुज में ----------
फेड़-रुख दबि गइल बचल नाहीं खरिका,
बाप-महतारी बिनु दूवरि भइलें लरिका।
जिनिगी के फेड़ पर टंगा गइलें आदिमी।।2।।
भूजा जस भुज में ----------
नाहीं एको लूगा नाहीं रहे के ठेकान बा,
धरती से मिलि गइले ऊँचका मकान बा।
बालू, ईंट, गारा में दबा गइलें आदिमी।।3।।
भुजा जस भुज में ----------

❑ शाहपट्टी,भोजपुर

गजल

डा० राम सेवक 'विकल'

आज अपने सहर म न पूछ कहू,
जेके देखीं ऊहे सभ बेगाना भइल।
कबे हमहीं ए गुलसन के माली रहीं,
अब त हमरे विरोधी जमाना भइल।
कबे अतर आ चन्दन से महकत रहीं,
देहिए आज आपन पुराना भइल।
केहू रोअत रहल केहू विहँसत रहल,
सभके चीन्हे के हम बहाना भइल।
जब उड़ल पाखी ई छोड़ि के देह के
तब ई जिनगी सहर के फसाना भइल।

बागवेड़ा कॉलोनी,जमशेदपुर
(झारखंड) 831002

कविता

बिरह बेदना

पारसनाथ सिन्हा

बिरह बेदना जेकरा सुनावे के चहनीं,
एह महफिल में देखनीं, उहे ना आइल।
जेकरा खातिर हम कइनीं अतना इन्तजार,
हमार मन, ना देख के हो गइल जार-जार।
दिल में लागल ठेस के बखान केकरा से करीं,
जेके सुनावे के रहे, ओकर कतना इन्तजार करीं?
क के वादा देले रहे दिल के दिलासा,
बाकिर वादा वादे रहल, पूरल ना अभिलासा।
का रहे गलती जे हो गइल हमरा से दूर,
इन्तजार करत-करत हम त हो गइनीं मजबूर।

स्नातकोत्तर भोजपुरी साहित्य विभाग
जगजीवन कॉलेज, आरा (भोजपुर)

www.bhojpurisahityangan.com

लोककथा

चोर के चतुराई

डिम्पल कुमारी

एगो राजा रहले। उनुकर एगो बेटा रहे, जेकर नाँव चतुरानंद रहे। चतुरानंद के पढ़ाई-लिखाई में मन ना लागत रहे। ऊ जब सयान भइले त राजा उनुकर बिआह करि देले। एक दिन राजा अपना बेटा से पूछले-बेटा, तूं आपन घर-गिरहस्ती चलावे खातिर का करबऽ? बेटा कहले - हम चोर बनब। राजा पूछले कि का तूं एगो होसियार चोर बनि सकेलऽ। जबाब में चतुरानन्द कहले – 'हँ'। राजा कहले-ठीक बा, तूं एगो होसियार चोर बनला के सबूत एक महीना के भीतरे दे द। चतुरानन्द कहले-ठीक बा।

दू-तीन दिन बाद राजा भिरी एगो चिट्ठी आइल। चिट्ठी में लिखल रहे – ए राजा, तहरा घर के छानी पर जवन सोना के कोंहड़ा रखल बा, ऊ चोरी होखे वाला बा। ई बाति सुनि के राजा भीतरे-भीतर खउलि गइले आ सउँसे गाँव में पहरा लगवा दीहले। कवनों आदमी जब ओह गाँव में आवे त ओकर तलासी लेला के बादे गाँव में जाये दीहल जात रहे।

एक दिन एगो बुढ़िया गाँव से बहरी पतई बहारत रहे। ओही घरी एगो कनिया ओकरा भिरी आइल आ ऊ बुढ़िया से कहलस-ए बुढ़ी माई हमरा के अपना साथे गाँव में लिआ चलबू ? बुढ़िया तइयार हो गइल आ ओकरा के अपना जवरे अपना घरे लिआ आइल। कनियवा बुढ़िया के खूब सेवा करे। ऊ दिन में बाहर ना निकले, खाली राते में निकले। एक दिन कनियवा इनार प पानी भरत रहे तले चउकीदार ओकरा के देखि के पूछलसि - ए, राति के तूं पानी काहें भरत बाड़ ? कनियवा कहलसि कि कनिया-बहुरिया दिन में का बाहर निकलिहन स? हमरा घरे बाहर के काम करे वाला कोई नइखे। एही से हम बाहर के काम राते में करींला। तब चउकीदार कहलस कि आछा ठीक बा। तूं एने से कवनों आदमी के आवत-जात देखलू हा का ? कनियवा कहलस कि हँ, एगो आदमी के एने से जात देखनीं हा । चउकीदार पूछलस कि ऊ आदमी कने गइल हा ? हाली दे बतावऽ त, ओकरा के पकड़े के बा। कनियवा कहलस कि ई काम हम करि सकींला। चउकीदार कहलस कि ठीक बा, जा पकड़ि के ले आवऽ। तब कनियवा कहलसि कि जब हम पकड़े जाइब त हमार पनिया के भरी ? चउकीदार कहलस कि तूं जा ओह आदमी के पकड़ि ले आवऽ, हम तहार पानी भरि देब। चउकीदार पानी भरत रहल आ ढेर देरी हो गइल तबो कनिया के पते ना। एने कावर राजा देखे गइले कि कोंहड़वा बा कि ना ? का देखत बाड़न राजा कि कोंहड़ा त ओहिजे बा बाकिर ओह पर लिखल बा कि कोंहड़ा आजु ना काल्हु चोराइब। राजा के खूब खीस बरल आ ऊ चउकीदार के खोजत-खोजत इनार भिरी पहुँचले त देखत बाड़न कि ऊ पानी भरि रहल बा। तब राजा ओकरा के नोकरी से निकालि के दोसर चउकीदार राखि दिहले। दोसरका राति के उहे कनियवा नदी के किनारे कपड़ा फींचत रहे। नयका चउकीदार घूमत-घूमत ओहिजे पहुँचल। ऊ कनियवा से पूछलस - तूं एह राति के नदी किनारे का करत बाड़ ? कनियवा कहलस-कपड़ा फींचत बानीं। तब चउकीदार कहलस कि राति के तहार कपड़ा धोआता ? कनियवा कहलसि – हम दिन में बाहर ना निकलींला आ घर में बाहर के काम करे वाला कोई नइखे। तब चउकीदार पूछलस कि तूं कवनों आदमी के एने आवत-जात देखलू हा ? तब कनियवा कहलस कि हँ, एगो आदमी के एने से ओने जात देखनीं हा । तब चउकीदार कहलस कि जल्दी बतावऽ, केने गइल हा ? ओकरा के पकड़े के बा। तब कनियवा कहलसि कि हम ओह आदमी के बड़ी आसानी से पकड़ि सकत बानीं। तक चउकीदार सोंचलस कि बिना भाग-दउड़ के अगर चोर पकड़ा जाई त बहुते आछा रही। ऊ कनियवा से कहलस कि जा ओकरा के पकड़ि ले आवऽ, हम तहार कपड़ा फींच देत बानीं। कनियवा चलि गइल चोर पकड़े आ चउकीदार लागल ओकर कपड़ा फींचे। एने कावर राजा कोंहड़ा देखे गइलन त देखत बाड़न कि ओह प फिर लिखल बा आजु ना काल्हु चोराइब! राजा खीसी मातल चउकीदार के खोजे चलले। ओकरा के कपड़ा फींचत देखि कि अउरी खिसिया गइले आ ओकरो के नोकरी से निकालि दिहले।

एक दिन राजा के चारि गो सार अइले स। राजा के चिन्ता में देखि के एकर बोजह पूछल लोग। राजा सये हाल बतवले ऊ लोग कहल कि रउआ फिकिर जनि करीं। हमनीं के चोर के पकड़बि जा। एक राति राजा के सार लोग चोर के खोजे निकलल। ऊ लोग खोजत-खोजत एक जगह पहुँचल त देखत बा लोग कि एगो साधु एगो ऊखि के खेत के आरी प बइठि के तपस्या करत बाड़न। ऊ लोग साधु से पूछल कि ए साधु बाबा, रावा कवनों आदमी के एने से आवत-जात देखनीं हा? साधु कहले कि कुछ देर पहिले एही ऊखि के खेत में एगो आदमी के दूकत

www.bhojpurisahityangan.com

देखनीं हा। तब ऊ लोग आपुस में राय कइल लोग कि बुझाता चोरवा एही ऊखि में लुका जात बा। त मिली कहवाँ से ? आजु ऊ धराइये जाई। तब साधुकहले कि बच्चा लोग आपन-आपन कपड़ा खोलि के एहिजे राखि द जा,काहें कि ऊखि में कपड़ा फंसि-फंसि जाई त दउड़े में ना बनी आ तब चोर के पकड़ल मोसकिल हो जाई। ऊ लोग सोंचल कि साधु महराज ठीके कहत बाड़न आ आपन-आपन कपड़ा खोलि के साधु जी के धरा दीहल लोग कि देखत रहब आ ऊखि के खेत में ढूकि गइल लोग। ऊ साधु का कइलन कि सभ कपड़ा के मोटरी में बान्हि के चलि दिहलन।

साधु महराज राजा के घर के सोझा से राहि धइले चलल जात रहन तले राजा के नजर उनुका प पड़ल। राजा साधु के अपना घरे बोलवलन आ आपन कुल्हि परेसानी उनुका के बता के एकर समाधान के उपाय पूछलन। ऊ साधु महराज से इहो कहलन कि हमार चारि गो सार एक दिन से गायब बा लोग। ऊ लोग अइहन कि ना? साधु बोलले कि आई लोग आ रहल बाति चोर के त आजु राति के चारि गो चोर रउआ दुआर प नंगे 'बहिनी-बहिनी' कहि के चिल्लइहन स। तब राजा कहले कि महराज रउआ हमार आधा परेसानी दूर करि देनीं। ओह दिन राति खा राजा सावधान होके चोरवन के इन्तजारी करे लगले।

एने कावर राजा के सार लोग के एक त चोर ना मिलल अउरी ना त कपड़ो चोरी हो गइल। अब ऊ लोग ऊखि के खेत में से निकलस लोग त कइसे ? एही से राति भर आ दिन भर ओही खेत में रहल लोग आ दोसरका राति के कसहूँ निकलि के घरे गइल लोग आ 'बहिनी-बहिनी' कहि के केंवाड़ी खोलावे लागल। जब राजा 'बहिनी-बहिनी' के आवाज सुनले त सोंचले कि चोरवा आ गइलन स का दो त ? साधु महराज ठीके कहले रहलन। राजा आपन आदमी के साथे लउर ले के केंवाड़ी भिरी गइलन आ केंवाड़ी खोलि के ऊ चारों जाना के चोर समुझि के खूब बना के मारल लोग। मार खात-खात चारों जाना बेहोस हो गइले। जब राजा ऊ लोग के धेयान से देखले त देखत बाड़ें कि ऊ चारों त उनुकर सरवे हवन स । राजा आपन कपार ठोंकि के रहि गइले।

अब राजा अपना मन में सोंचले कि बुझाता चोरवा के पकड़े खातिर हमरे निकले के पड़ी। अगिला राति के उहे चोर के खोंजे निकललन। एक जगह ऊ देखलन कि एगो गोंड़िन के दुआरी प एगो मेहरारू चकरी में दाल दरत रहे। राजा ओकरा भिरी गइले आ पूछले - ए मेहरारू, तूं अतना राति के एहिजा दाल काहें दरत बाड़ू? तब ऊ मेहररुआ कहलसि कि ए राजा, ई गोंड़िनिया हमरा के दिन में दाल ना दरे दिहलस, हम सोंचनीं कि राति के जब ई सूति जाई त जाके दर ले आइब। एही से अबहीं खा दरत बानीं। तब राजा कहले कि ठीक बा दरऽ आ एगो बाति बतावऽ कि एने से कोई आदमी आइल-गइल ह? कहलस मेहररूआ कि एगो आदमी के देखनीं ह, बाकी ऊ एगो गोड़ के लंगड़ बा। राजा कहले कि लागत बा कि उहे चोरवा ह। जात बानीं ओकरा के पकड़े। तब मेहररूआ कहलस कि रउआ हमार दाल दर देब त तब हम ओ., उन भ में पकड़ि के ले आ देब। राजा कहले कि एह से आछा का हो सकेला? जा तूं पकड़ि के ले आवऽ, हम तहार दाल दर देतानी। ऊ मेहररूआ चोरवा के पकड़े चलि गइल आ एने राजा ओकर दाल दरे लगले। गोंड़िनिया के नीन टूटल आ ऊ दाल दरला के आवाज सुनलसि । कहलसि कि अतना राति के, के अनस कइले बा? आजु उनुका के बताइब। ऊ एगो डंटा ले के निकलल आ ना एने देखलस, ना ओने देखलस, तावड़तोर डंटा राजा के ऊपर गिरावे लागल। राजा आहि-आहि करे लगले। गोंड़िनिया जब तक राजा के आवाज पहचनलस तब तले उनुकर खूब पिटाई करि देले रहे। ऊ अब मारल छोड़ि के राजा के उनुका घरे पहुँचइलस। राजा घरे गइलन तब जा के सभसे पहिले कोंहड़ा देखे गइले। देखत बाड़न कि कोंहड़ा त गायब बा। गाँव में पूरा हलचल मचि गइल। सभे इहे सोंचे लागल कि आखिर चोर के ह? जवन अतना चल्हाँकी से कोंहड़ा चोरा ले गइल आ केहू के पता ना चलल।

दोसरका दिन सउँसे गाँव के आदमी जुटले आ बिचार होत रहे कि आखिर चोर के ह ? तले उहे पतई बहारे वाली बुढ़िया दरबार में आइल आ कहलसि कि ए राजा, रावा काहें परेसान बानीं। चोर कतहीं आन ठहीं के ना ह। ऊ राउरे घर के ह आ राउरे बेटा ह। राजा चिहा के पूछले-ओकरा आपने घर में चोरी करे के रहे ? बुढ़िया बोलल-रउए नू अपना बेटा से होसियार चोर होखे के सबूत मंगले रहीं? ऊ कोंहड़ा चोरा के देखा देलस कि ऊ चोरी करे में उस्ताद बा। राउरे लइका कनिया आ साधु के भेस बना के सभ के भरमवलस आ आपन हुनर देखवलस।

एही से कहल जाला कि आदमी अपना बुद्धि के बल प ऊ काम करि सकेला जवन धन आ बल से ना हो सके। ❑ छतनवार (बक्सर)

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

कौलेश्वर सिंह 'कौशल'

खोंइछा में प्रेम के उपहार भरल बा
जिनिगी के साजल दुलार भरल बा –2
मनवां के उपवन में फुलवा फुलाइल बा,
देखि-देखि एकरा के हिरिदा जुड़ाइल बा,
खुसियन के अजबे निखार भरल बा –
खोंइछा में प्रेम 2
जगमग कइले बा नेहिया के ज्योति,
एकरा में जड़ल बा सरधा के मोती,
सभकर दिहल लागे प्यार भरल बा–
खोंइछा में प्रेम 2
जहाँ-जहाँ जाई आदर उहवाँ पाई,
देखि के लोगवा फूले ना समाई,
एह में बसन्ती बहार भरल बा –
खोंइछा में प्रेम 2
लागऽता माई के ममता के नेह बा,
भोजपुर के माटी में सानल सनेह बा
'कौशल' हिया के उद्गार भरल बा–
खोंइछा में प्रेम 2

बंशीडिहरी,सहार,भोजपुर

कविता (1) जिनिगी

मनोज कुमार सिंह 'भावुक'

उनका के हमेसा हँसत देखनी
-----दूर से
आ रोअत ----
लगे से।
कहीं उनकर नाम
'जिनिगी' त ना हऽ।

(2) इन्तजार

जेठ के दुपहरिया में
खटत बा ----
----एह उमेद पर
कि एक दिन सावन आई
त मन के धरती हरियरा जाई।
बाकिर -----
हाय रे हमार पागल परान
धाम में जर के राख भइल
राह निहारत लास भइल---
आ अब ----
एह फसल खातिर
का सावन ----का भादो ?

(3)सेंटीमेंटल ब्लैकमेलिंग

केतना नाजुक होला
भावुकता के छन
आदमी उगिल देला सब
लइका लेखा।
कवनों कसाई मन
ओमें से
उचिला लेला
अपना मतलब के बात।
साइत एही के कहल जाला
सेंटीमेंटल ब्लैकमेलिंग।

महाड़ (महाराष्ट्र)

खोंइछा के अगिला अंक 'दोहा' प खास होई

दोहा

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही'

(1) 'आरोही' मजबूर के, जाति होय ना धर्म।
मजबूरी इंसान के, कर देले बेसर्म।।
(2) भरल-पुरल परिवार में बूढ़ा लोग उदास।
दवा-दवाई भात ना, बइठीत केहु पास।।
(3) भाग-दौड़ के जिंदगी, उठापटक हर ओर।
'आरोही' फुरसत कहाँ, दिन दुपहरिया भोर।।
(4) जनता सासन बीच के, टूटल पूल तमाम।
अचके में ना रू-ब-रू,जन बिरोधी मुकाम।।
(5) नारकीय जीवन मिलल, गाँव नगर मजबूर।
जन प्रतिनिधि लोग सब, कुर्सी मद में चूर।।
(6) 'आरोही' टारल कठिन,घर में बीबी बात।
फूले फूल असोक के, खा नारी के लात।।
(7) ब्याह रचावे कोट में, माँ बापों अनजान।
'आरोही' अंग्रेज के, काटि रहल बा कान।।
(8) समकालीन साहित्य त नफरत रहल उधार।
'आरोही' कुछ ना मिली, समरसता के जार।।
(9)खान-पान में ध्यान रख,रहे न तनिक तनाव।
तन निरोग राखे बदे, आदत में बदलाव।।
(10)सोच समझ भोजन करे, इहाँ-उहाँ ना खाय।
बीच-बीच में निर्जला, सुख-संपति अधिकाय।।

अमीरचन्द कोठी के दक्षिण, आरा।

माटी में मिल जाई

मुन्द्रिका प्रसाद 'विकल'

हीरा अइसन कीमती काया एक दिन माटी में मिल जाई,
लाख -करोड़ बहुत कमइलऽ,मरला पर ई साथ न जाई,
हीरा ----।
बिना भजन के समय बितवलऽ,बीतल समय लवट ना आई,
बेटा-बेटी कुछ काम ना अइहें, मोह में गइलऽ तूं लपटाई,
हीरा ----।
अबहूँ से तूं चेत करऽ भइया, एह में मत करऽ तूं ढिलाई,
पाँच तत्व के एह पिंजड़ा से, ना जाने कब हंसा उड़ जाई,
हीरा ----।
राम नाम के भज रे मनवा, असली सुख बा एह में भाई,
कदम-कदम पर फिसलन बाटे, हर जगह बा बहुत कठिनाई,
हीरा ----।
झगड़ा-झंझट मत करऽ भइया,बेकार काम में जिनिगी बिताई,
क्राम-क्रोध अवरू लोभ-लालच में,जिनिगी देलऽ अब तूं गंवाई,
हीरा ----।
दीन दुखिया के सेवा करऽ तूं, कतना तोहरा के हम समझाईं,
हीरा अइसन कीमती काया, एक दिन माटी में मिल जाई।

सरैंया, भोजपुर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

दोहा

आचार्य पाण्डेय कपिल

(1) अच्छा लोग भा बुरा, बात करीलें सांझ।
कब ले हम रखले रहब, अपना मन पर बांझ।।
(2) सुन बबुआ के बात सब,मन हो गइल झँवान।
बापे दऽदे ना भइल, सेही लिहले ठान।।
(3) प्रेम मिलन अइसे करीं, जइसे सतुआ नून।
केहू ना बिलगा सके, कबहीं कवनों जून।।
(4) पहिले रोटी-दाल दीं, फिर पीछे उपदेस।
छूंछा ज्ञान बधार के, मत पहुँचाईं क्लेस।।
(5) कइल बड़ाई आज ले, जे राउर भरपूर।
करी सिकायत काल्ह ऊ, दुनिया के दस्तूर।।

मार्ग-3, इन्द्रपुरी,पटना-24

कविता

राधामोहन पाल

बड़की पतोहि हमार पढ़ल हीअ बीए,
चारि बेरा फूंकि-फूंकि चाह रोज पीए।
करो का बेचारी एकरा ढेर बा लचारी,
पान पराग मधु से बाटे एकर इयारी,
तलब तिरंगा तुलसी खाई जीये,
चारि बेरा फूंकि-फूंकि चाह रोज पीये।
बबुआ रोजे जाता खइले बिना डियूटी,
कहेली ऊ, कं बाटे हमरा से बियूटी,
घरवा में सभसे इहे टांठ बनि के जीए,
चारि बेरा फूंकि-फूंकि चाह रोज पीये।
बचपन के बिगड़ल हईं, सुधरी रहनिया,
घरवा में कबो ई नीक बोलस ना बचनिया,
देखि के रहनिया इनिकर सभे मुँह सीये,
चारि बेरा फूंकि-फूंकि चाह रोज पीये।

बगही (भोजपुर)

गजल

कृष्णानन्द कृष्ण

देर काहें हो रहल बा आज आवे में।
बोल दीं, बा का हरज सबके बतावे में।।
ना सधल सुर आज तक ले देख लीं हमरो।
कट गइल सउंसे उमर सुर के सजावे में।।
आरती के थार असहीं रह गइल रखले।
सरम लागेला बहुत माथा झुकावे में।।
दर्द हमरा जिन्दगी के हो गइल साथी।
चाह ना कवनो रहल मरहम लगावे में।।
'कृष्ण' जब से छोड़ के ब्रज द्वारका गइले।
ना मिले आनंद अब बंसी बजावे में।।

अशोक नगर,कंकड़बाग,पटना-20

कविता

नाँव लिखाईं

धर्मनाथ तिवारी

का जी! रउओ
अपना मेहरारू के
चरन दबाईंला?
चटकन खा के
गाल सुघराइंला?
अगर 'हँ' त आईं
आ पत्नी भगत में
नाँव लिखाईं।
का ? मेहरारू का
कहला पर
मतारी के डाटींले?
जब ऊ रूसेली त
'आरे हमर सब कुछ'
कहि के
कान्ह में साटींले ?
अगर 'हँ' त आईं
आ पत्नी भगत में
नाँव लिखाईं।
रउआ लड़िका-
अफुराइंले कि
खाना बनाइंले?
उनुका खइला पर
धांये खातिर थरिया
अगारी से खींचीले कि
सरमाईंले ?
अगर 'हँ' त आईं
आ पत्नी भगत में
नाँव लिखाईं।
रउआ का करब
राम, स्याम आ
देस के भक्ति
जब धरहीं में
अइसन नारी बाड़ी
आ उहे प्रभारी बाड़ी
त-का ?
झारू का मार से
डेराइंले ?
आ जेगैं-जेगैं
कहेली
टहल बजाइंले?
अगर 'हँ' त आईं
आ पत्नी भगत में
नाँव लिखाईं

ग्राम -कुआरी
* जिला-सारण(छपरा)

कविता

कजूस

राजदेव करथ

हई देखीं कंजूस के
आपन पइसा धइले रखलस
गैर के खइलस ठूंस-ठूंस के।
बड़ाई कइलस
पीछा लगलस
साहखर्च के खूब सरहलस
खइलस घर में घूंस के।
गइल बाजार जब सऊदा करे
ओकर पेट कतहूँ ना भरे
दुकान-दुकान घूमलस पहिले
देखलस सामान पूछ-पूछके।
बिल्डिंग बनवलस चकाचक
मरूआ बैल अस मारे झख
धन बिटोर के का होई
का होई देहिया सूख के।
लाख-दू लाख बैंक में धइलस
आपन जियरा के छछनवलस
का कहब ऊजबूक के।
धन बा त खाये के चाहीं
नीक से पहिरे-ओढ़े के चाहीं
भूखा-दूखा खिलावे के चाहीं
ना जाने लछिमी कब
चल जइहें घर से रूस के।

करथ , (भोजपुर)

रपट

धर्मनाथ तिवारी के लिखल हास्य आ करून रस से भरपूर सामाजिक नाटक 'ललसा' के सफल मंचन श्री अखिलेश तिवारी के देख-रेख में सारन जिला के कुआरी गाँव में वैष्णव देवी के मंदिर प कुवार पूरनमासी सं० 2058 के पूजा के अवसर प भइल। – **अवधेश तिवारी, कुआरी,सारन(बिहार)**

www.bhojpurisahityangan.com

कविता

कुछ करि के देखाईं जा

डॉ० शंकर मुनि राय'गड़बड़'

नया-नया साल कंदरजाई सभ नया-नया,
नया-नया काम कुछ करि के देखाईं जा।
नया दिन-रात में करीं जा कुछ नयी बात,
नयां सुभकामना के नया गीत गाईं जा।।
आई नया साल में विकार के जराईं सभ,
काम-क्रोध,मोह-लोभ जीति के देखाईं जा।
'गड़बड़' कारी अँधियारी के मिटावे बदे,
प्रीति-रीति भावना के दियना जराईं जा।।

जोयट, झाबुआ (म०प्र०)

जरूरी सूचना

'भोजपुरी विभाग' वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा से दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ' स्मृति अंक निकले जा रहल बा। भोजपुरी रचनाकार लोग से निहोरा बा कि नाथ जी से संबंधित रचना 01 मार्च 2002 तक भेजे के कृपा करीं। रचना भेजे के पता – डॉ० गदाधर सिंह
विश्वविद्यालय परिसर, कतिरा,आरा (भोजपुर)

कसौटी

'भाई के धन'

डॉ०रमाशंकर श्रीवास्तव

धन-दउलत ना रहित त सभे एह दुनिया में साधुए-संन्यासी कहाइत आ पाप-कर्म साफे घट जाइत। बाकिर भगवान आदमी के समूचा ममता धन के साथे बांध दिहले। गरीब से लेके अमीर तक धन के पीछे बउरा गइल। धन के धरती पर बड़का-बड़का स्वार्थ के गांछ उगि आइल। संसार के अनुभव में टंका गइल कि बिना रुपिया-पइसा के कवनो काम संसरेवाला नइखे। एही के पाके पाप बा, आ एही के लेके पुन्य बा। सायद इहे वैचारिक पृस्ठभूमि बा सुरेश कांटक के नाटक 'भाई के धन' के। कांटक जी एह नाटक में एगो ज्वलन्त समस्या उठा के मानव के आंतरिक चेतना के स्वरूप के सुन्दर ढंग से उरेह देले बाड़े। स्वाभाविकता अइसन बा कि हमनिए के समाज में से दउड़ के ई सब पात्र रंगमंच पर जा चढ़ल बा। सतवंती, सुखदेव आ राजेश कहाँ नइखन।

आँख के आगे घटेला त बहुत कुछ मगर ऊ समूचा मन के छुइए देत होखे, अइसन बात नइखे। नाटक के नायक सुखदेव के मेहरारू सतवंती जब सुखदेव के राय देत बाड़ी कि ऊ आपन सहोदर भाई राजेश के हत्या कर देस जवना से धन के हिस्सेदार के सवाल हरमेसा खातिर खतम हो जाव। अइसन खड़यंत्र के भनक लागते सहृदय पाठक के मन सन्न-से हो जात बा। आहि दादा, ई का होखे जात बा? आदमी एतना गिर गइल बा ? एगो मन मनावत बा कि सतवंती के बात सुखदेव ना मनते त केतना अच्छा होइत। धन के लालच में एगो देवता जइसन भाई के हत्या होखे जा रहल बा।

सच्चा आ स्वाभाविक रचना के इहे पहचान ह कि ऊ जब पाठक के मन में धंस जाला आ रचनाकार के भावना के साथे दोस्त नियर जोड़ा जाला त एही स्थिति के सास्त्रज्ञ लोग के भासन में सम्प्रेसन कहल जाला। कांटक के प्रस्तुत कृति में सम्प्रेसनीयता के गुन बा। बुझात बा जे अपने गाँव-टोला के लोग ई नाटक करत बा। सांच बात रंगमंच पर नाटक हो गइल बा।

वस्तु एतने बा । सतवंती अपना बेटी के बियाह पूरा दान-दहेज देके अच्छा बर-घर ढूँढ के करेके चाहत बाड़ी। ऊ अपना एह लालसा के साथे आपन आर्थिक स्थिति से कौनो समझौता करे के तइयार नइखी। एकरा खातिर पूरा धन चाहीं। आ धन के इन्तजाम में उनकर देवर राह में रोड़ा जइसन लागत बाड़े काहें कि ऊ पैतृक धन के आधा हिस्सेदार बाड़े। जबकि देवर राजेश के भावना उदार आ त्यागपूर्ण बा। मगर सतवंती के कलुसित मन पवित्र मानवीय भावना के हर स्तर पर हत्या करे के संकल्प कर लेता। सहोदर राजेश के हत्या मेहरारु के उकसवला में सुखदेव कर देत बाड़े।

भाई के धन खातिर एगो जघन्य पाप हो जात बा। एह से सुखदेव आ सतवंती आखिर में फांसी के सजा पावत बा लोग। फाँसी के सजा दिलवा के कांटक जी कानूनी हल निकाल लेले बाड़े। बाकिर समाज में एगो सनातन सवाल बिना जवाब के रह जात बा। लेखक के संकेत बा कि आदमी के अपना विवेक के भीतर झांक के देखे के पड़ी आ पूछे के पड़ी कि धन के पीछे आदमी एतना बउरा काहें जाला ? धन खातिर आदमी बा, आकि आदमी खातिर धन बा ? धन के लालच में एगो परिवार बर्बाद हो जात बा।

नाटक के प्रस्तुति में भासा आ संवाद बहुत बड़ा साधन ह। हर में फार ना होई त खेत कइसे जोताई ! संवादे त प्रान होला। कहे के पड़ी कि कांटक जी संवाद रचना के कुसल कारीगर बाड़न। पता ना हमरा कलम के कवन मलेरिया बोखार ध लेले बा कि काँपत-काँपत ऊ सुरेश कांटक के तारीफ करे लागत बिया। मनो कइला पर मानत नइखे। हर पात्र के संवाद स्थिति आ भाव के

www.bhojpurisahityangan.com

अनुरूप बा। रंगमंच पर नाटक रोचक होई।

सुरेश कांटक जी मुहावरा के भंडार बाड़ें। कहाँ से एतना जानत बाड़े, भगवान जानस। लेखक के कई गो रचना में हम देख चुकल बानीं। मुहावरा के धन उनका पास एतना बा कि कुछ एने-ओने छिटाइयो जात बा। धन भइला के मतलब ई ना ह कि बेकार लुटावत चलीं। एतना लुटा देब त हम गरीब के के पूछी? लाठी रखला के मतलब ई ना ह कि रउआ गुलाबो के फूल लाठी के हूरे से तूरीं। भर मुंह टिकुली पर नयन बान के खूबसूरती कहाँ जाई? भासा के पारखी लोग अंगुरी उठाई।

सतवंती एह नाटक के सबसे ससक्त पात्र बिया। ऊ भीतर से बाहर तक एक बिया। भावना आ व्यवहार के चदर ऊ एकहरे ओढ़ के घूमत बिया। कहीं दोहरापन नइखे ओकरा चरित्र में। एही से ओकर कठकरेजीपन पाठक के सहानुभूति बटोर लेत बा। बाकी सहोदर भाई के हत्या करके सुखदेव भारी अपराध बोध से ग्रस्त हो जात बाड़े। ओकर आंतरिक आघात उनका संवाद में व्यक्त बा। भाई के मुअले सुतार आ बैल के मुअले कुमार उनकरा के सुख नइखे देत।

थानादार जमादार-जज आदि के संवाद कानूनी व्यवस्था पर रोशनी करत मानवीय विवसता के करून पच्छ के उजागर करत बा।

हास्य-व्यंग्य के सृजन में कांटक कुसल बाड़े। आ एहू ते कांटक से फूल के उमीद के करी? दरोगा कहत बाड़े – 'सेनुर लुटा गइल ! (चिहा के) त सेनुर लेके कहाँ जाता रहा। कवन आदिमी तुम्हारा सेनुर लूट लिहलस। जरूर इहे बदमास लुटले होई। जमादार साहेब, बेंत उठाओ त, लगाओ ई बदमास को ई बेंत।' (पृ० 61)

जमादार – बिना थाना के अडर के केहू मडर कर सकत बा ? (व्यंग्य) – (पृ० 63)

'कांटक' के भासा आ मुहावरा प्रयोग के सराहना कइल जाई।

(1) मटि-लगनू के बेटी नइखे ? (पृ०18)

(2) अकेला में छकेला मारे गइल बाड़ी। (19)

(3) अरुआइल पीठा अस मुंह काहें भइल बा(24)

(4) बेटा-बेटी के सुख खातिर के का नइखे करत? ई काम हो जाई त हमार बेटी जिनगी भर दूध के कुल्ला करी। (35)

(5) हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीत भला सोहाला।(49)

'कांटक' के पास ग्रामीन भोजपुरी संस्कृति के पूरा अनुभव बा। नाटक में अवसरोचित गीतों के सृजन भइल बा जवन नाटक के प्रस्तुति में चार चांद लगाई। मानवता, भाईचारा आ दानवता जइसन भाव, पात्र के सृजन नया प्रयोग के साथ दर्सक आ अभिनेता के बीच कड़ी के काम करत बा। सुख-दुख समाज के बनिहारा वर्ग के प्रतिनिधि बा लोग जे सम्पन्न वर्ग के सामने मजबूर बा। उनकर करून स्थिति के प्रति लेखक के सहानुभूति बा।

सब मिला के 'भाई के धन' एगो सफल नाटक बा। एकरा द्वारा सास्वत सत्य के साथे समाज के यथार्थ चित्रो व्यक्त हो रहल बा। सांच सोझे मन के छूएला । सांचो कहत बानीं कि कांटक जी सामाजिक सांच के सांचे नियर लिख के भोजपुरी साहित्य के उपकार कइले बाड़े। बधाई।

पुस्तक – भाई के धन, नाटककार-सुरेश कांटक
छपे के साल-1999 ई० कुल पृ०-80,दाम-50/-रोपेया

वरिष्ठ रीडर, हिन्दी विभा०।
राजधानी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)नई दिल्ली

कविता

दीपावली

दिलीप कुमार 'दिलदार'

बाहर-भीतर चारू ओरिया अंधकार दूर भागल बा।
ई ज्ञान दीप बारल बा।।

सद्बुद्धि के होखे तन-मन में
एकर जन-जन में आसा,
दुर्बुद्धि पर जय-विजय के
ई दे रहल परिभासा

कइसे बिखरी संस्कृति जब ई मानवता जागल बा।
ई ज्ञान दीप बारल बा।।

भाईचारा सद्भाव के जबले
ई जरी हिया में बाती
बनल रही सनेह के तबले
घर-प्रान्त-रास्ट्र के थाती

आँख देखाई दुसमन कइसे जब पुरूसार्थ छागल बा।
ई ज्ञान दीप बारल बा।।

सत्य अहिंसा के नगरी में
देवता भी जहँ झूमस
दुख दलिद्दर कइसे बसिहें
जहँ घर-घर लछिमी घूमस

धरती गगन बीच फइलल अंजोर ई मंगलदीप साजल बा।
ई ज्ञान दीप बारल बा।।

बगही, पश्चिम चम्पारण(बिहार)

शब्दकारिता (मासिक) सं०-बद्रीविशाल मिश्र, प्रकासक-शब्दकारिता प्रकाशन,बलिहार (उत्तर प्रदेश)
एक प्रति के दाम 3/- रोपेया।

www.bhojpurisahityangan.com

लघुकथा

इन्साफ

डॉ० राज कुमार सिंह 'कुमार, विष्णुपुरी

लोग के ठेलम ठेल भीड । एक के ऊपर एक। देह पर देह। चिल्लपों आ हल्ला से कान में दरद उठे। मेहगरू आ लइकन के चिल्लहट से आसमान फाट गनगनात जात रहे। हरेक के हाथ में एगो टीना आ एगो कार्ड। अबहीं किरासन तेल के सरकारी ठेला आवे में देरी रहे।

हमहूँ जाके मरदवाला कतार में टीना आ कार्ड लेके खड़ा हो गइनीं। आधा घंटा बाद तेल ठेला आइल। लागल देह से देह ठेलाय। आगे वाला आदमी मुँहकरिये गिर गइल। ऊ उठल आ खीस में लागल लोग के गरियावे। गारी सुनके दू जन ओकरा के मारे लगले। दू चार जन बीच-बचाव कइले - "जाय द बबुआ धक्का से गिर गइलऽ त गारी देला के का जरूरत रहे ? कतार में अइसन होबे करेला।

समझवला-बुझवला के बाद तेल बाँटे के काम सुरू भइल त लागल तेलवाला 25 पइसा लीटर पर अधिका दाम लेबे। ओकरा अनुसार तेल के दाम बढ़ गइल रहे। कुछ लोग बिरोध कइल कि अबहीं तेल के दाम नइखे बढ़ल। एक त अइसहीं तीस पइसा हरेक लीटर पर अधिका ले तारऽ आ तेलो नपना से कमे दे तारऽ। त तेलवाला बोलल - हम का करीं? जाके आफिस से पूछीं। हमरा हरेक बीट पर दर से अधिका पइसा लागऽता आ हमरो बाल-बच्चा बा।

एगो बूढ़ कहल-जाय द बचवा। दू-चार आना लेके ई धनिक हो जाव बाकिर घरे बइठल त तेल मिल जाता, ना त केतना के घर में दीया ना जरित। ब्लैक से तेल आठ रूपये लीटर मिलता।

तब जाके तेल बाँटल ठीक से चले लागल। हमार बारी आइल त हम पहिलहीं वाला दर से तेल के दाम देनीं; त डीलर लागल तकरार करे - तूहीं छछलोल बाड़ऽ?

आउर लोग मुरूख बा? सभे बढ़ल दर देके तेल ले लेलक आ तूँ टकटेन करे लगलऽ। हम जब सरकार दर नइखे बढ़वले त तोहरा के काहें दीहीं ? दिन-दहाड़े डकैती करत बाड़ऽ ? एक त पहिलहीं अधिका पइसा लेत बाड़ऽ आ तेल कमे नाप देत बाड़ऽ।

बाता-बाती में डीलर हमरा के धकेल देलक। ऊ रहे मस्त पहलवान लेखा आदमी आ हम सींक जइसन। मारपीट में ना जीत सकीं, जान के हम आफिस में सिकाइत करे के धमकी देत बिना तेल लेले घरे चल देनीं।

एगो दरखास्त लिख के ओपर लोग के सही करावे चलनीं त कुछ लोग कहल कि जाय द, केहू के पेट पर लात ना मारे के चाहीं। नादानी क देलक त होसियार के काम ह कि नासमझ के माफ क देवे वाकिर हमरा अपमान के चोट कचोट मारत रहे। मुस्किल से पाँच गो हमउमिरिया दरखास्त पर सही कइले। हम दरखास्त जिला आपूर्ति आफिस में जमा क देनीं आ इलाका के आपूर्ति निरीच्छक से भेंट क के जबानी ममिला बतवनीं। ऊ हमरा के आस्वासन देलन कि हम इंसाफ करब आ बीट के दिन मौका पर आके गवाही लेके डीलर पर उचित कारवाई करब।

बीट के दिन ऊ ना अइलन। हमार साथी लोग गवाही खातिर इंतजार करते रह गइल। हम फेर जाके आपूर्ति निरीच्छक से मिलनीं त आफिस में काम के बहाना क के ना आवे के कारन बता देलन आ फेर अगिला बीट पर आवे के आस्वासन देलन बाकिर ऊ ओहू बीट पर ना अइलन।

अब हम जाके बीट के दिन आफिस में आपूर्ति निरीच्छक के पकड़ के लिआके जाँच करावे के सोंचनीं बाकिर ऊ ओह दिन आफिस में ना रहन। हम लगातार तीन-चार बीट जाँच खातिर आपूर्ति निरीच्छक के लिआवे के कोसिस कइनीं बाकिर ऊ समय पर उपलब्ध ना रहस बाद में पता चलल कि ऊ डीलर से घूस लेके जाँच प्रतिवेदन में झूठ के साँच आ साँच के झूठ क देले रहस। साथी लोग कहल-जाय द छोड़ऽ अब बवाल। ई ना जानऽ चोर के भाई गिरहकट। ऊ जाँच करे मौका-ए-वारदात पर थोड़े अइहन। लोग समझावल-एमें समय बरबाद कइला से अच्छा बा पढ़ाई में ध्यान लगावल। ओह लोग के बात सुन के ठठा के हँसत हम कहनीं – हम पढ़ाइये में ध्यान लगावे के रह खोजत बानीं।

विष्णुपुरा, छपरा

लघुकथा

पंचाइत के नेता जी

लालन प्रसाद पाण्डेय

तबकी गाँव पंचाइत के सभा पति चुना गइले सुरेश सिंह। बागानी अंचल ह। मतदाता जादेतर चाह मजदूर बाड़न स। गहिरा घुस-पैठ बा उनुकर मजदूरन

www.bhojpurisahityangan.com

में। पहिलका कारन त ई बा कि मजदूर समाज में प्रचलित प्रधान पंय 'चुलाई' के ई थांक उत्पादक हउवन। कय गो भट्ठी में माल तइयार होला। घर से तनिका अलग्य एगो दोकान में खुदरो धड़ल्ला से बिकाला। एक्साइज लोग के महीना बन्हाइल बा।

मजदूर लोग के पचीस रूपेया सैंकड़ा पर बिआज का साथे दोकान से रासनो दिवावेले। पइसा डूबे के डर ना रहे। कय गो मुस्टंडा फाइटर के साथे थनो से हेल-मेल बा। मजदूरन के साथे गाँव के गरीब लोग के उधारे खिआ-पिआ के ओकरा बदला में ढेर जमीनों लिखवा लेले बाड़े। अफलातून धान होला।

पियक्कड़ सिरोमनि दूगो गुंडा लइका के बापो हउवन। जानकार लोग बतावेला, खर्चा-पानी के कमी भइला पर बाप के लइकवा धंगवो करेलन स। मेहरो पर जब चुलाई के रंग चढ़ेला तब सिंह के गोड़ परिया करे के पड़ेला। चुनाव के बेरा प्रेसिडेन्ट (सभापति) खातिर पर्चा भरलन। दू जना अउरो समाज सेवी पढ़ल-लिखल प्रतिद्वंदी रहले। लोग का अनुमान रहे अबकी सिंह के जमानतो जब्त हो जाई।

चुनाव का पहिलका रात आस-पास के बागानन में ड्राम के ड्राम चुलाई उबिछा गइल। जीव भर पिअल सिंह के रयत लोग। बिहान भइला मत पेटी में बन्द हो गइल। जीत के जस्न ओही दिने सिंह किहाँ मन गइल। नतीजा उनुका मालूम रहे।

घोसना के दिने लोग चकित हो गइल। सिंह के प्रतिद्वंदी लोग के जमानतो जब्त हो गइल। सुरेश सिंह जिन्दाबाद के नारा से गूंज उठल अंचल। सिच्छा, कर्मठता, समाज सेवा के अर्थी निकाल दिहलस चुलाई अउर तिकड़म।

बरडूबी बाजार, तिनसुकिया(असम)

कविता

जिनिगी भर फरत-फूलात रहऽ

बाबू राम सिंह 'कवि'

जवन रूखा-सुखा मिले,प्रेम से अमृत जानि के खात रहऽ
मुस्कात रहऽ,बढ़ियात रहऽ,जिनिगी भर फरत-फूलात रहऽ।।
कुछ करत रहऽ कुछ धरत रहऽ,
दोसरा के खातिर मरत रहऽ।
दीया बनि जा सच के खातिर,
दिन-रात प्रेम से जरत रहऽ।
उजियार दिखा सब केहू के निमन मग पर ले जात रहऽ।।
जइसन करबऽ ओइसन भरबऽ,
जो बाउर काम से ना डरबऽ।
तू कौनो घाट के ना होखबऽ,
तब तूहीं बतावऽ का करबऽ।
दुसमन बनि जा बाउर खातिर निमन के खातिर नात रहऽ।।
अपन जिनिगी जीयत बदलऽ,
नेकी करऽ नीयत बदलऽ।
जीवन रूपी फटही लुगरी,
सच सारी में सियत बदलऽ।
भगवान से भागि के जइबऽ कहाँ उनही में लटत-लोटात रहऽ।।
आलस करि के कबो बइठऽ मति,
आपन अभिमान में अइंठऽ मति।
कर्मे महान हवे दुनिया में
'बाबूराम' बाउर में पइठऽ मति।
अच्छा लिखऽ-सीखऽ, हरदम अच्छे में अटल अघात रहऽ।
मुस्कात रहऽ,बढ़ियात रहऽ,जिनिगी भर फरत-फूलात रहऽ।

सुगर मिल, भरोली नवसारी (गुजरात)

लोककथा

किसमत के लेख

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा

एगो राजा रहले। उनुकर एगो लइकी रहे। ओकरा किसमत में लिखल रहे कि ओकर बिआह कोढ़ी से होई। ओकर मतारी सोचलसि कि एकरा के घर से ले के भागि जाईं जे एकर बिआह कोढ़ी से होइबे ना करी। कहीं नीमना जगह बिआह करा देबि। दूनों माई-बेटी चलल लोग। जात-जात एगो बंगला अइसन लउकल। ओह बंगला में एगो राजा कोढ़ी होके रहत रहे। ई बाति ई लोग ना जानत रहे। एह लोग का पियास बुफाइल। एह से ठहरि के पानी पीअल चाहल लोग। मतारी कहली कि ए बुचिया, देखु त जे बंगला में बल्टी-डोरी बा कि ना ? लइकी देखे गइल। जसहीं भीतर घुसलि तले केंवाड़ी बन्द हो गइल। अब त लइकी बड़ी फेर में पड़लि। अब मतारी बाहर रोवसु आ लइकी भीतरे रोवे। अन्त में लइकी कहलसि अपना माई से कि तू जा माई, जवन हमरा किसमत में रहे तवन भइल। मतारी हार-थाकि के घरे लवटि अइली आ लइकी ओहिजे रहे लागलि।

ऊ लइकी अपना संगे काम करे खातिर एगो लउंड़ी राखि लेलसि। अब ऊ लइकी रोज ओह कोढ़ी के सेवा करे। ओह कोढ़ी के देहि में बेटेकान सुई चुभावल रहे। ऊ रोजे सुई निकालल करे। ऊ सभ सुई निकाल देले रहे खाली दूनों आँखि पर के सुई अगो

www.bhojpurisahityangan.com

बाकी रहे त सोचली कि नहा-धोआ के पूजा क ला तब आके सुई निकालीं। इहे सोचि के ऊ नहाये गइल तली लउँड़िया सुई निकाल देलसि। राजा के आँख खुलि गइल। राजा ओह लउँड़िया के रानी बना देले आ ऊ लइकी लउंड़ी बनि गइल। अब राजा ठीक हो गइल रहले।

एक दिन राजा बाजार जाये लगले त पूछले अपना रानी से कि तहरा के का ले आइबि? लउँड़िया से पूछले कि तहरा के का ले आइबि ? तब लउँड़िया कहलसि कि हमरा के एगो कठपुतरी ले आईबि। राजा कठपुतरी ले अइले आ लउंड़ी के दे देले। जब ई लोग खा-पी के राति के सुति जा लोग तब ऊ कठपुतरी नचावे आ पूछे कि ए कठपुतरी ! आ त का ए राजा धिअरी ? आ त चेरी बेटी राज करे, हम गोबरपथनी। आ त चुप रहऽ, राजा बेटी तहरे राज। एक दिन पहरूआ राजा से कहलसि कि ए राजा साहेब रावा लोग के सुतला पर के रोज हइसे-हइसे बतिआवेला ? तब राजा कहले कि तनी हमरो के सुना देबे। आ त, हँ। राजा दुका लगले। लउंड़ी सुतला पर कठपुतरी नचा के कहे लागलि कि ए कठपुतरी ! आ त का ए राजा धिअरी? चेरी बेटी राज करे, हम गोबरपथनी। आ त चुप रहऽ राजा बेटी, तहरे राज। अब राजा आके अपना लउँड़ी से पूछले कि का बात ह ? तूं का रोज कहेलू ? तब ऊ बतवली कि हमरा किस्मत में कोढ़ी से बिआह लिखल रहल हा। डरे हमार माई हमरा के ले के भगली। तबो जान ना बाँचल। हम रावा सँगे परलीं। राउर सेवा करे लगलीं। राउर सभ सुई हम निकलनीं। दूनों आँखि में के बाकी रहि गइल तब हम नहा पूजा क के निकाले के सोचलीं। गइलीं नहाये। तली दाई निकालि देलसि। राउर आँखि खुलल तब रावा दइअवे के रानी बना लेनीं आ हमरा के लउँड़ी। अब राजा सभ बाति जानि गइले आ लउँड़ी के रानी बना के राज करे लगले।

अनाईठ आरा , (भोजपुर)
802301

विचार परक लघु निबंध

भोजपुरी कविता के त्रिकोन

बरमेश्वर सिंह

'. . . अजब त्रिकोण बा
पता ना, का होखी
अबहीं त तना-तनी बा'

उक्त पद्यांश हमार एगो कविता के अंतिम अंस ह। दरअसल, हम आपन उक्त कविता आज के सामाजिक परिदृस्य के मद्देनजर लिखले रहीं। आज के सामाजिक परिदृस्य, जउना के तीन कोन पर क्रमस: बइठल सत्ता कामी, क्रान्तिकामी आ भ्रान्तिकामी एक-दोसरा के लक्ष्य क के आपन-आपन हाथ-पांव भाँजि रहल बाड़ें आ बीच में घेराइल निरीह आम आदमी अनेरिये लहु-लुहान हो रहल बाड़ें। आज भोजपुरी कविता के कमोबेस इहे स्थिति बा। जउना के तीन कोन पर क्रमस: बइठल गजलगो, गीतकार आ 'नया कविता' के झंडाबरदार एक-दोसरा के बड़ा बेरहमी का संगे बखिया उधेड़ रहल बाड़ें। चूंकी हमहूं छिट-पुट कवि बानीं, एह से हमार इयार मंडली में कविये लोग के बहुमत बा। जाहिर बा, ओह कवि-मित्र लोगिन का संगे हमार बइठकी आ बतकही होखत रहला के अस्वाभाविक ना कहल जाई !

खैर, भोजपुरी कविता के प्रति आपन कवि-मित्र लोगिन के तर्क आ कुतर्क सुनत-सुनत हमार दिमाग में भोजपुरी कविता के जउन फोटो बनल बा, ऊ बहुत सुन्दर नइखे। काहें कि भोजपुरी के हमार गजलगो मित्र के अनुसार भोजपुरी गीत त गवांरन के चीज ह, आ ओकरा के फिल्मी धुनन पर कतनो रेघा-रेघा के गवला से भोजपुरी कविता के कल्यान होखे वाला नइखे। भोजपुरी के नया कविता के प्रति हमार गजलगो मित्र लोगिन के विचार त अउरी हृदय विदारक बा। जउना के अनुसार भोजपुरी के नया कविता त कविता हइये नइखे। भला ! गद्य के पद्य कइसे कहल जा सकेला?

भोजपुरी के गीतकार भाई लोगिन के पाले कुछ विपरीत विचार बा। ऊ लोग गजल के नाम सुनते आपन नाक-भौं सिकोड़े लागेलन। दरअसल, ओह लोगिन के विचार से भोजपुरी गजल के नाम पर उर्दू सायरी के नकल उतारि के भोजपुरी कविता के लंगो-चंगो भले कइल जा सकेला, भोजपुरी कविता के प्रतिस्ठा ना बढ़ावल जा सके। काहें कि, भोजपुरी के प्रान गीत में बसेला। जउना के गौरवसाली इतिहास बा। जहाँ तक ले भोजपुरी के नया कविता के सवाल बा, त ऊ भोजपुरी के 'मिथ्या कवि' लोग के करतूत भर बा। जउना के कउनो भविस्य नइखे। आ ओकर जनाजा बस निकलहीं वाला बा।

भोजपुरी के नया कविता लिखे वाला कवि कुछ विसेस तरह के बुद्धिजीवी बाड़े। ओह लोगिन के अनुसार आज के मनई के टूटल भाव-बोध टूटले पंक्तियन में व्यक्त हो सकेला। ओकरा के छंद के छल-छंद में अझुरावल, यथार्थ से मुंह चोरावल ह। एह से भोजपुरी के गजलगो आ गीतकार समाज के सामने झूठ परोसे के

www.bhojpurisahityangan.com

अपराधी बाड़ें।

भोजपुरी कविता के एह विकास में घेराइल बेचारा पाठक बेमतलब के पिसा रहल बा। दरअसल, पाठक बेचारा के त कविता पर चिपकल लेबुल से कउनों सरोकार ना होखे। ऊ त अइसन कविता पढ़ल चाहेला, जउन कि ओकरा जिनिगी के तस्वीर होखे, आ ओकरा के ना खाली रस में डूबा देवे, बल्कि ओकरा के आगे बढ़े खातिर प्रेरना देवे। भोजपुरी कविता के नाम पर थोक के भाव से लिखल जा रहल कवितन में से अइसन दमगर आ स्तरीय एक-दू गो कविता खोजि लेवे के धीरज भोजपुरी पाठकन में से बहुत कम लोगिन के पासे बा। एह से भोजपुरी के औसत पाठक भोजपुरी कविता ना पढ़े के एक तरह से फैसला करि लिहले बाड़े। एह से कविगन के कमजोरी खातिर पाठकन के दोस दिहल उचित ना कहल जाई।

सिल्प आ कथ्य के घिसल-पिटल बिबाद के बिना उठवले हम ई कहल चाहब, कि आजुओ दमगर आ स्तरीय कविता के कसौटी पाठक के हृदय पर पड़े वाला प्रभावे बा। कहे के मतलब कि पाठक दिमागी कसरत के सहारे ना, बल्कि आपन गहन अनुभूतिये के सहारे कउनों रचना के सराहेला भा खारिज करेला। एह से, भोजपुरी कविता के नाम पर चाहे ऊ गजल होखे, गीत होखे भा नया कविता होखे, यदि ऊ पाठक के दिल में जगह बनावे के कूबत राखत बा, त ओकर स्वागत आ सराहना होखबे करी।

निःसंदेह, भोजपुरी के कवियन के आपसी छींटाकसी भोजपुरी कविता खातिर असुभ बा। काहें कि ऊ स्थिति ना खाली आत्मबिस्वास के कमी उजागर करे वाली बा, बल्कि ओकरा से आत्महीनतो के पता चलेला। कई दफा इहो देखे में आवेला कि जब केहू आपने बारे में संदिग्ध होला, तब ऊ दोसरा के बारे में अफवाह फैलावे लागेला आ आपन डवांडोल अस्तित्व के बचावे खातिर नानाविध तिकड़म करे लागेला। अइसना में, ना खाली 'कवि-कुल' के, बल्कि कवितो के भारी छति होखे लागेला आ संबंधित भासा दिनोंदिन दरिद्र होखे लागेले।

बिरोधो के एगो ढंग होला। हर नया आन्दोलन के बिरोध पहिलहूं भइल बा। बाकिर, बिरोध में अइसन कठकरेजी ना हो जाय के चाहीं कि एक मंच पर सहजता का संगे बइठलो दुलम हो जाय। भोजपुरी गजल खातिर सास्त्रीयता के दम्भ, भोजपुरी गीत खातिर बांसी अस स्वर के दम्भ आ भोजपुरी के नया कविता खातिर बुद्धिजीवी होखे के दम्भ, भोजपुरी साहित्य खातिर हानिकारक बा। एकरा अलावे खाली माध्यमो के सब कुछ मानि लिहल खराब बात बा। काहें कि, तब कविता के उमिर आ कूबत दूनों घट जाला। अइसे इहो ठीक बा कि कुसल हाथ में पड़ि के माटियो सोना हो जाला, आ अकुसल हाथ में पड़ल सोनो के कुछ ना बनि पावे।

कवि आ कविता असीम होला। ई दूनों के सीमा में बान्हल बेजांय कहाई। कवि आ कविता खातिर कबहूं कउनों अन्तिम बात ना होखे। कवि आ कविता खातिर जहिया कउनों अन्तिम बात होखे लागी, ओही दिन दूनों-के-दूनों मु जाई। काहें कि अन्तिम बात में जड़ता होला, जबकि स्फुटन खातिर स्पन्दन जरूरी होला।

अब एगो उदाहरन से बात स्पस्ट होई। भाई कृष्णानन्द 'कृष्ण' जी आपन गजलन का बिषय में खुद लिखले बानीं–"लोग चाहे जे कहे, परवाह ना 'कृष्ण' का अपना गजल पर नाज बा"

अब इहवाँ खेला देखीं! इहवाँ कवि आ कविता दूनों मु गइल बा। काहें कि, इहवाँ अन्तिम बात कहि दिहल गइल बा। जउना का चलते कवि आ कविता दूनों ना खाली जड़, बल्कि निर्जीव हो गइल बा। एही से उक्त बात कहला के बाद ना त कवि के पासे अउरी कुछ कहे खातिर सेस रहि गइल बा, ना कविता पढ़ला के बाद पाठक का लगे।अब गोसाईं जी के कहनाम देखीं–

"कवित बिबेक एक नहीं मोरा
सत्य कहहूं लिखि कागज कोरा"

वाह! एकरे के चमत्कार कहल जाला। एहिजा कहे खातिर असीम गुंजाइस बा। तबे लोग-बाग तरह-तरह से कहि रहल बा। कहे के सिलसिला जारी बा। बाकिर, गोसाईं जी आ उनुकर कविता के बिसय में कहल अबहीं खतम नइखे भइल। पता ना ! कब तकले कहल जात रही।

खाली लोगे-बाग खातिर काहें, एहिजा खुद कवियो (गोसाईं जी) खातिर आगे कहे के राह साफ बा। तबे त ऊ कहत बाड़े –

"निज कवित्त केहि लाग ना नीका
सरस होहीं अथवा अति फीका"

कतना साँच बा कवि के उक्त कथन ? महाकवि होखला के बादो कहवाँ बा इचिको दम्भ ? सायद अइसने कवि अमर होलन!

ग्राम+पो०-धनडीहा,जिला-भोजपुर-802160

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के सपूत

महाराज कुमार दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

नाथ जी बाबू कुँअर सिंह के बंसज रहलीं।। सिपाही विद्रोह के अमर सेनानी बाबू कुँअर सिंह जेकरा लपलपात तेगा के तेज से अंग्रेजन के आँख चोन्हरिया जात रहे, जगदीशपुर रियासत के राजा रहलीं। जगदीशपुर में बाबू साहेब के कवनो बंसज नइखे बाकिर जगदीशपुर से सटले दलीपपुर गाँव में बाबू कुँअर सिंह के भाई के बंसज आ के बसि गइल रहलन।

दलीपपुर निवासी महाराज कुमार नाथ जी के जनम सन् 1896 ई० में बिहार के एही इतिहास प्रसिद्ध प्रतिस्ठित सामंतसाही क्षत्रिय परिवार में भइल रहे। नाथ जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से इन्टर परीक्षा पास कइलीं बाकिर देस के दुरदसा देखि के उहां के दिल दरकि गइल। मन में देस-सेवा के भाव लहर मारे लागल। बस उहां का सभ बिसारि के देस सेवा में जुटि गइलीं आ जीव-जान से असहयोग आन्दोलन में भाग लेबे लगलीं। देस के आजादी खातिर कइएक बेर जेल गइलीं। अपना साहित्य माला के जादे पुस्तक त नाथ जी जेले में लिखलीं। सन 1936 ई० में नाथ जी दलीपपुर में विश्वनाथ उच्चांग्ल विद्यालय के स्थापना कइलीं।

देस सेवा से जादे महत्व नाथ जी के साहित्य सेवा के दिहल जा सकत बा। नाथ जी पहिले ब्रज भासा में लिखत रहलीं। सन् 1920 ई० में ब्रज भासा में लिखल छाड़ि के खाली हिन्दी आ भोजपुरी में लिखे लगलीं। नाथ जी हरकन मौला लेखनी से हिन्दी आ भोजपुरी में लगभग चार दर्जन किताब लिखलीं जवना में दू दर्जन से जादा छपि चुकल बा।

भोजपुरी लोक गीतन के संग्रह क के 'भोजपुरी लोक गीतन में करूण रस' नांव के ग्रंथ प्रकासित कइलीं। अनेकन भूलल-बिसरल अनजान आ उपेक्षित कवियन के खोज क के 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में स्थान दिहलीं'। भोजपुरी में लिखल अनेक प्राचीन दस्तावेज कागज-पत्तर में ढूँढ़ि के उहां का भोजपुरी गद्य के प्राचीन रूप के पता लगवलीं। 'साहित्य रामायन' महाकाव्य उहां के भोजपुरी में अनमोल ग्रंथ बा। भोज, भोजपुर आ भोजपुरी प्रदेश में उहां के ऐतिहासिक सोध के प्रतिभा झलकता। नाथ जी बहुमुखी प्रतिभा के विद्वान रहलीं हा। उहां का काव्य, नाटक, लोकगीत के संकलन क के सोधी छात्रन खातिर सामग्री इकट्ठा कइलीं आ भोजपुरी के विद्वानन के प्रेरना आ प्रोत्साहन दिहलीं। उहां का जहाँ भोजपुरी के अधिवेसन होत रहे, उहां जात रहलीं। उहां में भोजपुरी आ लोक संस्कृति से प्रगाढ़ प्रेम रहे। नाथ जी प्रयाग आ उज्जैन में अखिल भारतीय लोक संस्कृति सम्मेलन सन् 1958 ई० आ 1961 में करवले रहलीं बनारस के भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन में भाग लेले रहलीं।

नाथ जी दलीपपुर हाई स्कूल में सबसे पहिले भोजपुरी के पढ़ाई चालू कइले रहलीं। उहां का दलीपपुर में 'रैन बसेरा' नांव के कुटिया में साहित्य सृजन करत रहलीं। ओकर प्राकृतिक छटा बड़ा सोभनऊक रहे। चिरई-चुरूँग के उहाँ का बड़ा सवखीन रहलीं। हजारन के संख्या में पसु-पच्छी पोसले रहलीं।

नाथ जी के हिन्दी में 10 गो किताब छपल बा आ 20 गो बेछपल बा। भोजपुरी में उहां के छपल किताबन में 1. भोजपुरी लोक गीतों में करुण रस, 2. भोजपुरी के कवि और काव्य, 3. साहित्य रामायन, 4. गुनावन , 5. एटम के युग में, 6. बाबू कुँअर सिंह, 7. भोज, भोजपुर और भोजपुरी प्रदेश, 8. कुँअर सिंह नाटक एक अध्ययन, 9. भोजपुरी एक समीक्षा वोगैरह बाड़े स।

अब बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद जी लेखा भोजपुरी के लेखक, नाटककार, सोध कर्त्ता, कर्मठ सेवक आ प्रेमी मिलल दुर्लभ बा। उहां के 27 जून 1970 के रात में उहां के छावनी पर सुतले में हत्या हो गइल।

निमेज (बक्सर)

गीत

शिव शंकर प्रसाद जायसवाल 'मौजी'

बतावऽ सुगना केहू काहें के पाली
तोहरा उड़े के बान बाटे हाली-हाली बतावऽ...
तोहरा खातिर लोग बने-बने घूमेलनि
रात-दिन घूमि-घूमि रहिया के चूमेलनि
तवनों पर छिन लेलऽ ओठवा के लाली।बतावऽ...
मिठी-मिठी बोलिया पर सब मोहि जाला
तोहरा खातिर एगो खेल बुझाला
अचके में उड़ि के बइठ जालऽ डाली।बतावऽ...
घरवा में रहलऽ त सब कुछ खइलऽ
जवन-जवन मन भइल तवन-तवन कइलऽ
निकलि के आँखिया देखावे लगलऽ लाली।बतावऽ...
रहला के तोहरा ठीकान नइखे कवनों
कब तक रहबऽ प्रमान नइखे कवनों
कतनो लगावे कोई रेसम के जाली।बतावऽ...
'मौजी' कहसु सुनऽ-सुनऽ मोर सुगना
बहुत घर घूमलऽ मति बनऽ घर घूमना
चाल सुधारऽ ना त घर करऽ खाली।बतावऽ...

❑ डुमराँव, बक्सर (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

पावती

* साँढ छतीसा ह (भोजपुरी कविता संग्रह) कवि - हरिद्वार प्रसाद किसलय, प्रकासक - मंडल प्रकासन, राजापुर (भोजपुर), कीमत-10 /- रोपेया, छपे के साल - सन् 2000 ई०, कुल्हि पृ०-32
* भोजपुर के मुरेठा (भोजपुरी कविता संग्रह), कवि-अयोध्या प्रसाद 'मुरेठा', प्रकासक - सुरभि प्रकासन, कीमत - 15/- रोपेया, कुल्हि पृ०- 16
* संत पुरोया (हिन्दी कविता संग्रह), कवि-पं० राम सुभग मिश्र 'रसु' प्रकासक - देवकली प्रकासन, सोनवर्षा, चरपोखरी (भोजपुर), कीमत -25/-रोपेया, छपे के साल - सन् 2000 ई०, कुल्हि पृ०-64
* चकोह (भोजपुरी सामाजिक नाटक), नाटककार-पं० रामसुभग मिश्र 'रसु', प्रकासक-देवकली प्रकासन, सोनवर्षा, चरपोखरी (भोजपुर), कीमत-15/-रोपेया, छपे के साल-सन् 2001 ई०,कुल्हि पृ०-44
* चवनी में अठनी (भोजपुरी कहानी संग्रह), कहानीकार-पं० राम सुभग मिश्र रसु' प्रकासक - देवकली 'प्रकासन, सोनवर्षा, चरपोखरी (भोजपुर), कीमत-75/- रोपेया, छपे के साल-सन् 2001 ई०, कुल्हि पृ०-152.
* डॉ० स्वर्ण किरण अभिनन्दन ग्रंथ, प्रधान संपादक-डॉ० प्रभु नारायण 'विद्यार्थी',प्रकासक-डॉ० स्वर्णकिरण अभिनन्दन ग्रंथ समिति, सोहसराय, नालंदा (बिहार), कीमत-200/-रोपेया, छपे के साल-सन् 2001 ई०, कुल्हि पृ०-364.
* इन्द्रधनुष (हाइकु-काव्य), कवि-डॉ० भगवत शरण अग्रवाल प्रकासक-हाइकु-भारती प्रकासन, अहमदाबाद-380015, कीमत -100/- रोपेया, छपे के साल-सन् 2000ई० कुल्हि पृ०-64.
* कोरा कागज (भोजपुरी नाटक), नाटककार-हीरा प्रसाद ठाकुर, प्रकासक-अनिल कुमार एवं राजकुमार, कीमत-25/- रोपेया,छपे के साल-सन् 2001 ई०, कुल्हि पृ०-80
* भक्ति सुधा सागर (भोजपुरी), कवि - विक्रम दास, कीमत-11/-रोपेया, छपे के साल-सं०2057, कुल्हि पृ०-42
* गीता सञ्जीवनी (हिन्दी),कवि-विक्रम दास, कीमत -10/-रोपेया, छपे के साल-सं० 2056, कुल्हि पृ०-80
* अखिल भारतीय भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका(मुख-पत्र-तिमाही)(जागरन अंक),अध्यक्ष-सह-संपादक-विद्यानाथ ओझा, प्रकासक-अखिल भारतीय भोजपुरी भासा सम्मेलन, 211, पाटलीपुत्र कॉलोनी, पटना।
* वंदे मातरम् (भोजपुरी नाटक), नाटककार-सुरेश कांटक, प्रकासक-नवशक्ति प्रकासन,कांट,बक्सर, कीमत-50/-रोपेया, छपे के साल-सन् 2001 ई०, कुल्हि पृ०-72

रपट 'भोजपुरी महोत्सव -2058' सम्पन्न

पर साल नियर असवो 24-25 दिसम्बर 2001 के नागरी प्रचारिणी सभागार, आरा में अतुल प्रकाश जी के संचालन आ निर्देसन में 'भोजपुरी महोत्सव' के आयोजन भइल। दू दिन तक चले वाला एह महोत्सव में एक-से-बढ़-के-एक कार्यक्रम भइल। पहिला दिन कार्यक्रम के उद्घाटन एम०एम०पी० के आरक्षी उपाधीक्षक सुबोध कुमार जी आ दोसरका दिन स्थानीय विधायक अमरेन्द्र प्रताप सिंह जी कइनीं। कार्यक्रम के पहिला दिन अध्यक्षता जानल-मानल साहित्यकार रामायण सिंह जी आ दोसरका दिन महेन्द्र सिंह जी कइनीं। स्वागत भासन प्रो० अक्षयवर सिंह आ धन्यवाद ज्ञापन के०के०सिंह जी कइनीं। एह अवसर पर भोजपुर के जिलाधिकारी महोदय संजय कुमार जी के हाथे पुरस्कार आ सम्मान पत्र दीहल गइल।

गजल

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

बगिया फरे का पहिले उजरिये गइल।
आदिमी हद से आगे गुजरिये गइल।।
आँखिया अम्बर प आपन गड़वले रहीं।
सपना घाटी में अचके डगरिये गइल।।
छतिया ई फूल रहे , बजर हो गइल।
कतने लोग वादा कइके मुकरिये गइल।।
न्याय खरिदाला, मडर घोटाला रोजे।
बज्जे आजादी अइसन बजरिये गइल।।
करिया सोसकन से ई देस उबरी कि ना।
गोर गोरवन से त ई उबरिये गइल।।
उनुका हाथी नियन दाँत दू ए 'रवि'।
चुपिया सधला से उनुकर सुतरिये गइल।।

*कुसुरूपा, सरेंजा, चौसा,
बक्सर (बिहार)-802114

भोजपुरी विश्व
(भोजपुरी के तिमाही पत्रिका)
सं०-डॉ०लाल बाबू तिवारी
संपादकीय कार्यालय-
मलयानिल,बुद्धा कॉलोनी,
पटना -1, एक प्रति के
दाम-25/-रोपेया।

www.bhojpurisahityangan.com

संस्थान में उपलब्ध किताबन के सूची

रचनाकार -डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

1. भोजपुरी शब्दानुशासन (भोजपुरी व्याकरण) कीमत- 30/-
2. सुरतिया ना बिसरे (रेखाचित्र संगह) कीमत- 20/-
3. हवा के बात (ध्वनि रुपक) कीमत- 30/-
4. मेघदूत (भोजपुरी अनुवाद) कीमत- 20/-
5. कैलास मानसरोवर (यात्रा वृतांत) कीमत- 40/-
6. पत्रावली : दिवंगत भोजपुरी सेविन के कीमत- 100/-
7. खेल-तमाशा (नुक्कड़ नाटक संग्रह) कीमत- 40/-
8. एक-से-एक (भोजपुरी हाइकु संग्रह) (सं०) कीमत- 25/-

सुरेश कांटक

9. हाथी के दाँत (भोजपुरी नाटक) कीमत- 40/-
10. भाई के धन (भोजपुरी नाटक) कीमत- 50/-
11. सरग-नरक (भोजपुरी नाटक) कीमत- 25/-
12. समुंदर सुखात बा (भोजपुरी कहानी संग्रह) कीमत- 50/-
13. वंदे मातरम् (भोजपुरी नाटक) कीमत-50/-

रामायण सिंह

14. कलंगी (भोजपुरी कविता संग्रह) कीमत- 10/-
15. लोकगीता (श्रीमद् भगवद्गीता के भो०पद्यानुवाद) कीमत- 25/-

डॉ० अमर सिंह

16. विश्वामित्र (भोजपुरी प्रबन्ध काव्य) कीमत- 55/-
17. मर्यादा पुरुषोत्तम (भोजपुरी प्रबन्ध काव्य) कीमत- 55/-

पं० राम सुभग मिश्र 'रासू'

18. बता दे मीतवा (भोजपुरी कविता संग्रह) कीमत- 21/-

राजबली प्रसाद

19. वारिस बंदना (भोजपुरी-हिन्दी भक्ति गीत माला) कीमत-15/-

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

20. आदमियत (भोजपुरी एकांकी संग्रह) कीमत - 20/-
21. बेगुनाह (भोजपुरी कहानी संग्रह) कीमत - 60/-
22. साक्षात् लक्ष्मी (भोजपुरी सामाजिक नाटक) कीमत - 15/-

पत्रिका के चन्दा

एक प्रति	–	4/- रोपेया
सालाना	–	20/- रोपेया
सदस्यता	–	5/- रोपेया

महाभोजपुर (भोजपुरी के तिमाही पत्रिका)
संपादक आ प्रकासक-विनोद कुमार देव,सम्पादकीय आ प्रधान कार्यालय-सरयू भवन,पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड,पटना-1,
एक प्रति के दाम - 10 /- रोपेया।

प्रेषक :

डॉ० दिनेश प्रसाद शर्मा
अध्यक्ष - भोजपुरी अनुसंधान संस्थान,
मुहल्ला+डाकघर - अनाईठ (आरा)
(प्रसाद पेपर वर्क्स के निकट)
जिला - भोजपुर (बिहार) 802301

छपी पुस्तक/बुक पोस्ट

सेवा में,

पिन - 121